





१५८१/१०२

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

महाराष्ट्र राज्य सरकार, न्याय विभाग, मुंबई

मो. नं. १०२/१५८१

धर्मरत्न बज्राचार्य पुस्त श्री महाविहार DH408

[illegible][illegible]

॥ अथ सूच्यते सर्वधर्माः नृणां कानामसमाधिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विप्रपूज्यस्य तदा अपमाननियता साधनानां सर्वमाव
 कयमकवृद्धः अननेव समाधिना विहस्य धिसत्त्वमहासत्त्वः क्रिः प्रमनूतना सम्यक्साधिमहिमसूचकवृद्धनः लवानपुष्पासू
 तिः सुविप्रवमाह ॥ यावत्तथा यमगवन्नाधिसत्त्वमहासत्त्वः पूर्वके सत्त्वगते न रहति सम्यक्साधयेन नूतनायाया सम्यक्साध्या
 नेन समाधिना विहति ॥ सतमखिसमाधिनसमनपुष्पति ॥ न च न समाधिना समनः अहं सम्यहित अहं समाधिसमापयन
 अहं समाधिसमापयनं न वक्तव्यं सर्वथा सर्वत्र समीक्ष्यत ॥ उवमक आयुषा सा निपुण आयुषक सूरुतिमनदवाचन
 यनायुषा सूरुत समाधिना विहति ॥ साधिसत्त्वमहासत्त्वतथा गत न रहति ॥ सम्यक्साधयेन नूतनायाया सम्यक्सा
 ध्याः सकस्य समाधिदर्शयिषु सूरुतिनाह नाहि तु मायुषा सा निपुण सत्त्वमहासत्त्वमविहिसंकुलपुत्रः समाधिनजानाति
 न सजावित आयुषा सा निपुण आह ॥ न जानाति न सजानित ॥ यायुषमानसूत वदिसि ॥ आयुषमानसूरुतिनाह न जानाति
 न सजावित ॥ ॥ यायुषा सा निपुण वदामि ॥ ॥ तत्कसहते न जानाति न सजानित ॥ अविद्यामानत्वेन न
 समाधिः सत्त्वमाधि न जानति न सजानित ॥ ॥ अथ खदूतगवान् नायुषकसूरुते यसाध ॥

तिः तत्कसहता सुथाहितं प्रह्लापात्रमिगापत्रिदमयति ॥ प्रह्लापात्रमिगापत्रिनमयति ॥ न च काधमिर्वर्द्धयति नमानं वर्द्धयति ॥ यानापनाहमपिग
 क्रान्ति ॥ उवचननः सम्यक्साधयेन नूतनायाया सम्यक्साध्याः सपसूत नृगिगुकासः काधसवसमं नृयमित्यवसक्तिपुमावमपिगतिरुत ॥ म
 मपिसंकीसिक कूनपूयावाकनइहिवाइष्टधर्मिकगुलपत्रिगक्रान्ति यमायुषपात्रमिगामूरुहिष्टतिधर्मिष्टतिवाचयिष्टतिपर्यवाप्यतिपुव
 नयिष्टतिदगमिष्टतिपदकपूदकतिस्वाध्यासति ॥ उवमकगकावाप्यतिपुवगयिष्टतिदगमिष्टतिउपदकतिइष्टतिस्वाध्यासति नसगन्यत्पमात्पत्राय
 यिकनभानिपूतवाकधर्मिष्टति नसूरुति ॥ तदा विगृहिगुकामानाविवदिगुकामानां विनाधयत्कामानानगहिकामायाप्रायाः पत्रिपत्रिगमिष्टति ॥
 ॥ ममपिसंकीसिक कूनपूयावाकनइहिवाइष्टधर्मिकागुनादवानामिदुलगवकमनदवाचन ॥ अथ खदूतगवान् नायुषकसूरुते यसाध
 दमेनाययुपुष्पति ॥ अननायवाधिसत्त्वमहासत्त्वनाम ॥ रगवानाह ॥ पूननं पत्रकीगिकय ॥ मायुषपात्रमिगावलपूयावाकनइहि
 गावाउरुहिष्टतिधर्मिष्टति वाचयिष्टतिसूर्यवाप्यतिपुवदुपिष्टतिदगमिष्टतिपुदकतिउदकतिस्वाध्यासति सचसकलपु
 त्रावाकलइहिगावा ॥ मायुषपात्रमिगामवमूर्गकधर्मयत वाचयतपर्यवाप्यपुवतयदसयनपदिसनसाधयनमूर्गमवर्द्ध
 मानसममवर्द्धमानसममसिलसिसमा नृदसाधुसुसममवन नगावाइवतिर्हस्यवाइलिकामगावासगीमधगतस्यविदुतावा

ॐ

三

22

[illegible][illegible]

पुस्तक

७
ग्री

तावा ७० मापुष्पापानमी तं लिखित्वा पूरुषक गतास्वाकृत्वा क्वापयदगनाध दिवाहिः पूषाधूपग भूमा ल विनपन चूर्ण चिवन कृष्णजघ्ना यना का हिः
 समाकोच दिपमाला हि वृह विधा हि च पूजा हिः सत्कर्ण्य नू कर्ण्योत्मान य नू जयद चयः पचाय न य नू अथ न स ह न सम्य क्वा व द स प नि दि वि न
 स ग नि ग सि स प प ति स प म ॥ प नि ग हि या न य नू ॥ ता नू व दि वा हि पूषा धूप ग भूमा ल विधा क न पूषा क न इ हि ता वा व द न न प थ प स
 व न ॥ नू व मू क र ग वा नू स कृ द वी ना मि द म न द वा च नू ॥ त न हि को सि क त्वा म वा य पु ति पु क्रा दि य था नू क म नू अ था क र्ण्यो त क स ह न म य
 स को सि क या य न था ग न स्या ह नः सम्य क्वा व द स सर्व ह ता ल वा हि नि व ग कृ तः स क त म स्या पु ति य दि जी क मा नो न ग थ ग न न ह ता स म य
 स नू द न नू न ग न स म य क स वा धिः सर्व ह ता पु ति ल ष्ठा इ ति स वं धा ॥ नू व मू क र ग वा नू मि द म न द वा च नू ॥ ७० हे ह व क र ग वा पा हा व
 त मि ता पा सि क मा ना श न न था ग न न ह ता स म य क्वा व द नानू न ग स म य क्वा धिः सर्व ह ता पु ति ल ष्ठा इ ति स वं धा ॥ त ग वा ना ह ॥ त स्या कृ हि
 को सि क न ना त्वा वा ग लि लं प ति ल म क त न न था ग न स ॥ स था ग न ७० ति स था ग कृ तिः सर्व ह ता या कृ पु ति ल ष्ठा या कृ थ ग न कृ थ ग न
 ७० ति स था ग कृ ति ॥ य म को सि क सर्व ह ता न था ग न स्या ह न स म य क्वा व द स प हा पा न मि ता नि जा न र वा ७० ख च को सि क न था ग न स्या स र वा व स नि
 न पु ति लं क ॥ पु हा पा न मि ता पा य को ग ल नि जा नः सर्व ह ता ना य य कृ ता र व ति ॥ नू व द्या य नू त्रि ग्री ना सर्व ह ता न स्या पु हा व ना र व ति ॥ वृ द्वा ग नि
 न पु हा व ना र व ति ॥ ध र्म ग नि न पु हा व ना र व ति ॥ स द्य ग लि न पु हा व ना र व ति ७० ति ॥ नू व स र्व ह ता न ह तु का य मा त्म रा व ग नि न पु ति न कृ

२३

सर्व ह ता ना सं य कृ त्वा सर्व सत्वा नां चैतु ह त्व व न नि यः सत्क न ती या मा न नि यः पू ज नि याः इ च नी याः प चा नि य स वृ ता र व ति ७० व च
 म म प नि नि वि न स्या धि मि त ॥ नू वा ग नी ना ना पू जा र वि ष्य ति ॥ त स्या कृ हि को गि क यः क थी कृ ल पू ता वा कृ ल इ हि ता वा ७० मा प हा पा न मि ता लि खि त्वा
 पू रू क ग ता वा कृ त्वा स्या प य द ना ध दि वा हिः पूषा धूप ग भूमा ल वि न प न चूर्ण चि व न कृष्ण जघ्ना य ना का हिः स म तं च दि प मा ला व द
 वि धा हि च पू जा हिः सत्कर्ण्य नू कर्ण्योत्मान य नू ज य दि क या प द्या य नू अ य म व को गि क त या कृ न पू ष या कृ ल इ ता वा व द न न प
 थ प स व न ॥ त क स ह ता ॥ सर्व ह ता न स्या हि को सि कः न न कृ ल पू ष वा कृ ल इ हि ता वा पू जा कृ त्वा र वि ष्य ति यत्कृ ल पू ष वा कृ ल इ हि ता
 वा पू जा कृ त्वा र वि ष्य ति यत्कृ ल पू ष वा कृ ल इ हि ता वा ७० व पु हा पा न मि ता या सि य मा ना या पू रू क ग ता या वा का न ग नू क न मान या पू जा ना म र्च ना
 म य चा या ना पू जा च वि वि धा य नू यो दि य म व न ता व द न न प थ प स व न ॥ त क स ह ता ॥ सर्व ह ता न स्या हि को सि कः न न पू जा कृ त्वा र वि ष्य ति य पु हा पा न मि ता य पू जा
 कृ ति ष्य ति ॥ नू व मू क र ग वा नू मि द म न द वा च नू य ७० मा र ग व न नू दि प का म नू षा ७० मा प हा पा न मि ता च त्रि षी ष्य न ना कृ हि ष की न धा न
 पि ष की न वा च पि ष की न प र्य वा त्प स नि न पु व न यी ष्य ति न द क नि ना प द क नि न स्या धा स नि ता ७० ना पु हा पा न मि ता पू ष धूप ग भूमा ल वि न प न चूर्ण चि व न
 ल कृ ष्ण जघ्ना य ना का हि स म तं च दि प मा ला हि वृ ह वि धा हि च पू जा हि न स कृ त्रि ष्य ती न ग नू क त्रि ष्य ति न मा न यि क त्रि ष्य ति न पू ज य ष्य ति ना र्च य ष्य ति ना प चा
 यि ष की कि नू त र ग व न स्या स नि नू व म हा सि का र ग व ना का पु हा पा न मि ता या पू जा कृ त्वा र वि ष्य ति न च नू व द पि ष्य ति उ त ह स्या कि व त स्या की ॥ व द पि ष्य की

सुदधदवकलय मधिम च पसन विरुवाधयचिन मत्यायाधायन ॥ गगयाइरु डीयाधनमवाचयत्यर्थ वा प्रया सुवर्द्धयधग इपदिवाइ
 दिगनखाधयत्यनय विरुननसंपकागय दधमसां धवन् विरुयात्मनसा धवन्त यथाधिक याचपहया ३ मुमनिमीमा सामा यद्यन
 गकस ॥ पूरु कगता मपिकला धनय सूपय सधर्मचिन किनिहगामावदनडी समु कदाहत्मा सधर्मा कधन कधिसत्त्वानामहासत्त्वान
 चानग्रहापसहानः कता हविषानि नगावेकल्योनति गतिनां पुष्पा लमितासह कर्मा गुरु कर्मा मानम न्यजय दवय दपचाय द्पूषा धूपगन्धः
 मात्य विनयनः धूर्तवर्तुषु प्रेयसे धजेः पताकाहिः समता चदिपमाला हि वइ विधाहि च पूजाहि पूजय दयमवतन्ः संकीसिक कृतपूषा
 वा कलइहिता वा वरु मनपूषय संवति ॥ नि वृत्तुखनूपन कोसिक कटिस फ वृमया क धागता धागुगर्का सुणाय क चित्तकोमिक कलपूषा
 वा कलइहिता वा वरु मनपूषय संवति ॥ नि वृत्तुखनूपन कोसिक कटिस फ वृमया क धागता धागुगर्का सुणाय क चित्तकोमिक कलपूषा
 पूषा दिवो धूपदि वीगन्धदिवो माला दिविविगय धादिवा च वृत्तु दिवो वरु दिवो धाज दिवो हि यत्तु हि दिवाहि पताकाहि समता चदिपमा
 ला हि वइ विधाहि च दिवाहि गत कर्मा गुरु कर्मा मानय यजय दवय दपचाय द्पूषा धूपगन्धः संकीसिक कृतपूषा वा कलइहिता वा

२३

कतानिदानवदपूषा सुवर्द्धय कृष्णा हा वरु एवन वइसगन रगवानाहा नरसंकीसिक कलपूषा वा कलइहिता वा वरुवच पूषय संवति पकूमा
 पुष्पा लमिता मरिसवृद्ध देव क लयन धिम च पसन विरुवाधयचिन मत्यायाधायन ॥ गगयाइरु डीयाधनमवाचयत्यर्थ वा प्रया सुवर्द्धयधग इपदिवाइ
 मरिस यइपदिवा त्वाधायत्यनय विरुननसंपकाग यदर्थमस्य हि वृत्तु यात्मनसाधवन्त यथाधिक याचपहया ३ मुमनिमीमा सामा यद्यन
 नगः पूरु कगता मपिकला धनय सूपय सधर्मचिन किनिहगामावदनडी समु कदाहत्मा सधर्मा कधन कधिसत्त्वानामहासत्त्वान
 कता हविषानि नयवेकल्योनति ॥ गगया नापुष्पा लमिता सत्कर्मा मानय न्यजय दवय दपचाय द्पूषा धूपगन्धः
 वरु धजे धाहिः पताकाहिः समता चदिपमाला हि वइ विधाहि च पूजाहि पूजय दयमवतन्ः संकीसिक कलपूषा वा कलइहिता वा वरु
 नपूषय संवति ॥ नि वृत्तुखनूपन कोसिक कटिस फ वृमया क धागता धागुगर्का सुणाय क चित्तकोमिक कलपूषा
 यक लाक धागा सर्वसत्त्वानां मकीसिक सत्त्वानां कं स क नत्वमय क धागता धागुगर्का सुपंकलय रुधया वर्जिव दिवो धूपदि वीग
 धादिवा मानप सिदिवा धुर्तु दिवो वरु दिवो धाज दिवो हि यत्तु हि दिवाहि पताकाहि समता चदिपमा ला हि वइ विधाहि च दिवाहि
 पूजाहि सत्कर्मा गुरु कर्मा मानय यजय दवय दपचाय द्पूषा धूपगन्धः संकीसिक कृतपूषा वा कलइहिता वा

可也

[illegible]

७

[illegible]

३५ *

कागयदर्थस्वाधिवृत्त्यात्मानसाधवकृत॥ यथाविकयाचपहयागुपनिमीतामापयताकृतः पूरकगतामपि कृत्वाधनयत्कृपयत्सहस्र
चित्रस्तिरिहतामावधनधिः समुद्राहृतमासधर्मागहनवाधिसत्त्वानामहासत्त्वानाश्चानुग्रहीमसंहारः॥ कृताहविषयति॥ ननुवेक
त्यनति॥ तावेनांप्रहापानीमितासत्कृप्याङ्गिरकृप्यात्मनयत्पूजयदचयदपचायतः प्रथोक्षपगतमात्माविलपनेत्थर्गवसेत्तुप्रेक्ष्ये
द्यच्छलिः पताकाहिः समंताचदिपमालाहिवइविष्वाहिः प्रजाहिः पूजयदचयदपचायमवगातसैकोकः कूलपूयावाकूलइहितावा
तगानिदानं वइतनपूथपुसंवति॥ तिष्ठतु त्वत्पूथकोणिकद्विसाहस्रमध्यामलाकतासर्वसत्त्वानीवनः कोणिकप्रिभाहसुमहासाह
सुलाकंधातासर्वसत्त्वामकेकः सत्त्वनेकेकं सफनत्वमयइभगतधातुगर्भः सुपकात्रयकृयावर्जिवदिद्योः प्रथेदिद्योः धूपेदिद्योः
गन्धेदिद्योः मालेदिदिद्योः विलपनेदिद्योः धूपेदिद्योः वसेदिद्योः धूपेदिद्योः धूपेदिद्योः धूपेदिद्योः धूपेदिद्योः धूपेदिद्योः धूपेदिद्योः
विष्वाहिः वदिवाहिः प्रजाहिः सत्कृप्याङ्गिरकृप्यात्मनयत्पूजयदचयदपचायतः क्लिप्तानासैकोणिकपिननसर्वसत्त्वामानिदानं वइतनपूथपुसंवति॥
॥ गकआह॥ वइतनगवनेइसुगतः लगयानाह॥ आतः सैकोसिकः कूलपूयावाकूलइहितावावइतनपूथपुसंवति॥ यच्छमांप्रहापा
नीमितामहि सैदधदवकलयनधिसुपुसैनचिह्नः वाधायचिह्नः सत्यायाध्यासयतः नूनयीइगद्विधाधनयदाचयपर्यवागुद

पुया प्रवक्तुं यदगय इपदि स इदि ॥ अत्वा अयत्नस्य च विस्तनन संप्रकाश यदर्थमस्यात्मनसा भवतु ॥ यथाधिक याचय ह्यया उपनिमिया सा मापय
नाकसः प्रसक्तगतामपि हत्वा धानयस्यापयसधर्मचित्रस्ति हतार्थावृद्धनेति समुक्तदाहतेमासधर्मात् धानवाधिसत्त्वानामहासत्त्वानां च
नगहापसंहानः कृत्स्नविषयि ॥ नमुवेकल्यनतिः कालेनापहपात्रमितासत्कृत्यां नृकृत्यां तानयपूजयदचयदयचायत ॥ पूषेधूपेर्गंधेमा लोवी
लपनत्वं वृक्षे च ये धर्मे द्यौः पताकादिः समताचदिपमानादि वरुविधादिश्च पूजादिः पूजयदचयमवतत् सकोनिककूलपूजावाक्रेतरहितावाकतानिनैव
रुतनप्रभं य संवति ॥ नष्टुत्वनपूनः कोसिक प्रिसाहसमहासाहसलाकभागे सर्वसत्वाय वा मकेकः सयकेक सपनत्नमयकथागतधनुगर्हसुपकानयी ॥
गचयावर्जिवदिव्यानि पूषधूपगभमानविलपनचूर्तिचिवलचुगुध्वजघापताकादिः समताचदिवादिपमालादि वरुविधादिश्च दिवादि पूजादिः स
त्कृत्यां नृकृत्यां तानयपूजयदचयदयचायत यपितकिचिलोसिक प्रिसाहसमहासाहसलाकभागे सत्वा संचतूनसमर्वज्रपूर्वाचनममानूषकमा
मलानंप्रतिरंरुनमपनिकलपमपादाय तगुकेकसत्त्वकेकसपनत्नमयकथागतधनुगर्हसुपकानयनकेकश्च सत्त्वका सर्वानसुपां कानयत ॥ कानयत्वा
चताम्यतिस्थाप्य कल्पं वा कल्पवणखवासर्ववाधे सर्वगीतिः सर्वनितिः सर्वरूपज्ञातावचनिदिवाः सर्वपूषेः सर्वधूपः सर्वगंधेः सर्वमाल्यैः सर्वविलपनेः सर्ववृक्षैः
सर्ववस्त्रैः सर्वदिवादिः सर्वचुगुध्वजघापताकादिः सर्वताचदिपमानावरुविधादिः श्रदिद्यामानविकितिः सर्वपूजादिसत्कृत्यां नृकृत्यां तानयपूजयदचयदयचायत ॥

五

[illegible]

कल्पनमस्तु त्वं प्रहृष्टा नमि तस्मिन् ॥ यावत्सर्व
पात्रिषु पदविनोक्तं ॥ यत्पुण्यं प्रतिपादयन् संपन्न
नपत्त्यस्य कनसकं चंद्रकं यो विव ॥ कथाम्
मम तुल्यहकी वसुला सकृदध्यानया ॥ ५ ॥ यत्पु
नः सवैशमयिवा गृहीयतां नवनाम्ना माया
क ॥ नवः पुत्रास्तद्वत्पालव ॥ नवमस्य कथा
निचुनिदिता ॥ चंद्रलखवता नारि नवपातसि सर्व
धर्मे कायानामासि नमः ॥ पुत्रा ॥ यवदा ता
वादा ववादिना त्वमेव प्रसन्नो नवानां सवर्गना

॥ अथ सज्जननी चासि विदुः प्रोक्तं ॥ यत्प्रत्ययं यत्प्रतिष्ठां सृजन्नाथस्य न विदुः ॥ तस्यास्य कथनमन्युः नागद्वेषो ह विदुः ॥ नागकृमिकृतं चित्तं
कृमिजायिगच्छति ॥ सृजन्नाथस्य चित्तं विदुः हि नृपलपस्य ॥ यथाभवन्नप्यन्यत्प्रपन्नं न प्रतावतः ॥ प्रपन्नं च विदुः कृतं दिदं महद्दत्तम् ॥ ताम्र
वक्षोः पश्यन् प्रपन्नं विदुः ॥ मां गुरुं मे कौः ॥ ताम्रवक्षोः पश्यन् प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥
सर्वदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥
नाथस्य चित्तं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥
मिदं मे ॥ ताम्रवक्षोः पश्यन् प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥
या ॥ ताम्रवक्षोः पश्यन् प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥
सर्वदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥
सर्वदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥ अहं विदुः प्रपन्नं विदुः ॥

॥ श्रीगुरु नमो नमो ॥ अथ सूच्यते सर्वधर्मा रक्षादाना नाम सप्त ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 मतोऽसाम्भवनः सर्वसावकप्रत्यक्षकवृद्धेः अनेनैव समाधिना विहृष्टाधिसत्त्वः महासत्त्वः किंप्रसन्नः नान्यस्यैवाधिसत्त्वस्य स्वधत्त
 ॥ वक्ष्यतेः तावन्नायस्यानुरक्तिः सुविप्रवमाह ॥ वाक्यं तोयम् गवन्वाधिसत्त्वः महासत्त्वः पूर्वकैरेकधा गते नरुहीः सम्यक्प्रवृत्तेन नर
 तनाया सम्यक्प्रवृत्तेनैवाश्नने समाधिनाः विहृतिः ॥ सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा
 हितः अहंसमाधिसमापन्नः अहंसमाधिसमापन्नः ॥ ७ ॥ ते वक्तव्यं सर्वधर्मा रक्षादाना नाम सप्त ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 यथा न सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा
 नायां सम्यक्प्रवृत्तेनैवाश्नने समाधिनाः विहृतिः ॥ सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा
 अथ सूच्यते सर्वधर्मा रक्षादाना नाम सप्त ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 तेन सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा

७

साधुसत्त्वः पुनस्तुतः अथ माननि ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 पुनस्तुतः अथ माननि ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 कश्चात्तानिपुत्रः ॥ कथं हि नृणां वनमधिपः कश्चात्तानिपुत्रः ॥ कथं हि नृणां वनमधिपः
 ॥ तेन सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा
 हितः अहंसमाधिसमापन्नः अहंसमाधिसमापन्नः ॥ ७ ॥ ते वक्तव्यं सर्वधर्मा रक्षादाना नाम सप्त ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 यथा न सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा
 नायां सम्यक्प्रवृत्तेनैवाश्नने समाधिनाः विहृतिः ॥ सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा
 अथ सूच्यते सर्वधर्मा रक्षादाना नाम सप्त ॥ धिवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य विपुलः पुनस्तुतः अथ माननि
 तेन सत्त्वमधिपसमधिपसमन्यपथात् ॥ नवकं नष्टमाधिसत्त्वस्य नरहंसमा

7

[illegible]

प्रश्न

5

[illegible][illegible]

১৫

[illegible]

५३

[illegible]

[illegible][illegible]

प्र
३

येवदपयापुत्रांकिमया तसर्वसत्वास्तानपुत्रमयानसंख्यानं प्रपद्यति स्ताप्य नुवन्त्रपांपूजां कात्रययुः तकिं मयसकोटि क अविनूत सर्वसत्त्वस्तानिप
नमस्तुभ्यं प्रभवः ॥ सक आह ॥ वदत गव वदत गत ॥ एगवानाहा भतः सकीतिक कूलपुत्रावा कूलइहितावा वदत नपुत्रयुसवमिः ॥ यष्टु मा प्रहृषानमि
तामहि मुदधदवक य मत्रधिमुचपुसत्रचिह्नावा अयचिह्नमया ध्यायामः ॥ १७ ॥ यादृक् क्रो मादानमदा वमत्यर्थाधूमा युवक द सयइपदि अइदिताः
त्वा अयत्पुत्र लु प्रविस्तन हासं प्रका मयदथ मया विव द्यात्मन साधव ऊत ॥ यथाधिकमावपु पुत्रायतुता तमीमा सामापयताकसः पूरुकागतापिकत्वा २६
अनय स्तजपयसिद्ध मयिनास्ति तिहतामावधनती समुद दाह त माहदमी कहीनं वा चिसत्ताता माहासत्ता तावान् पुत्रापुसहातः कताह विषयति ॥ न तु व कत्य
नतिता ता जे नापुत्रावा जमतां सुकृपां मानय सुकृप दईयद पवायत ॥ पुष्ये विगल्यमा ल्येविलपने पुत्रे व हिकुर्त धर्मे ल्यहः पताका रिः सम
मावदीपमालाहि व इवि अहि पुत्राहिः पूजयदयमवततः सकीतिक कूलपुत्रावा कूलइहितावा तानि पात्रे म् इतनं पू लंपुसवति ॥ नुवमक अकृदवाना
मि पुत्रावक म तदवायत ॥ नुवमत पुत्राव मवमत सुगत ॥ पुत्रापात्रमिताहि एगव सत्कृता ग र कृतीमानयता पूरुयता मवयता कूलपुत्रे अवा कूलइहिता
वा अतिता नागत पु पुत्रावका एगव की व ध काने ये निह्ना नषु सबला क अ तु यत्ते न कया सत्कृता ग र कृता मानिताः पुत्रिता अइहिता अप सा मितो यत्
वकिाति क तुल्य रूप नती गवनेन पया ये न हि साहस महा साहस ॥ क अता सर्वसत्ता ये पिता एगव न ग म न वे वा लु को प म य ति सा ह म म सा साह म व लु क

अनुपुसर्वसत्वास्तानुकेकः सारः ॥ केके सफलमयं त आगतन अतु ग क स पंका नयदे के क म सत्वं मां सर्वानसु पा कात्रयत्कात्रयित्वा चतायुतिष्ठा ॥ यक
त्यम्वा केत्याव जष म्वा सुर्व वायेः सर्वगा ने सर्वरु ल्येः सर्वरु र्म ताग वचा न दिव्यः सर्वपुष्यः सर्वधूपेः सर्वग ल्येः सर्वमात्यः सर्वविलपनेः सर्ववृत्तः सर्वविभु दिव्य
हिः सर्वकुत्र भजयातु पकीहिः सर्वकावदीपमालाहि अइवि अहि च दिव्या मानषिकि रिः सर्वपुत्राहिः सत्कृ यष्टि र्कृ यी मानयत्पुत्रयदईयद पवायत ॥ यय
मवततः सरवसर्व सत्त्वयः कूलपुत्रावा कूलइहितावा वदत नपुत्रयु सवति ॥ यष्टु मा प्रहृषानमितामहि मुदधदवक य मत्रधिमुचपुसत्रचिह्नावा अयचिह्नमया
ध्यायामः ॥ १७ ॥ यादृक् क्रो मादानमदा वमत्यर्थाधूमा युवक द सयइपदि अइदिताः त्वा अयत्पुत्र लु प्रविस्तन हासं प्रका मयदथ मया विव द्यात्मन साध
व ऊत ॥ यथाधिकमावपु पुत्रायतुपवि मिमा सामापयताकसः पूरुकागतापिकत्वा अनयत्पुत्रापयत्स धर्मचिन स्ति तिहता मावदने त्रि समुद दाह त माहदमी क
हीनं वा चिसत्ताता माहासत्ता ना अ नु ग हा पु सहातः ॥ कताह विषयति न तु वे व ल्येन ति ॥ ताह्येना नां पुत्रापात्रमिता सत्कृ यी कृ र्क यी मानयत्पुत्रयदईयद पवा
यता पुष्ये विगल्यमा ल्येविलपने पुत्रे व हिकुर्त धर्मे ल्यहः पताका रिः समकावदीपमाला हि व द निदान मवद न व पु ल्य पु सवति ॥
उर स खययह की निक कूलपुत्रावा कूलइहितावाः तानि निदान वद न न प ल्य पु सवति ॥ अवि सं सकीतिक कूलपुत्रावा कूलइहितावा
तानि निदान वद न ल प ल्य पु ग वति ॥ अत्रय सकीतिक कूलपुत्रावा कूलइहितावा तानि निदान वद न न प ल्य पु सवति ॥ अविमाने सकीतिक क

वाकलइति ता वा प्रसादवद्वाहविषयति॥ ॐ ममपि सकोशिक कनपुत्रावाक नइति ता वा दृष्ट आम्बिकं गेपत्रिगहायति॥ तनखलपुनः
 कोशिक कूल पुत्रे वा कूलइति ता तस्य धर्मनति स्तानस्यपत्रिसामन क नसुचित्रचाकसमुपाचा नानपुचा नयितव्यः तस्यो गुरुवर्गमेव
 तापत्रिपुत्रमुपापाय॥ पुनत्रपत्रं कोशिक तस्य कूलपुत्र स्यात्वा कूलइति तुर्वान काय कुमनः अचिरं कुमथ उत्पत्त्यतः॥ संसृत्वमेव सम्यक् क
 यिष्यति॥ सुखे च प्रति कुमिष्यति॥ सुफलं स त्रपाप वान्स्वप्राप्तु क्रति॥ पण्यं च पुनस्तथागतानवार्तिनः सम्यक् वं वधुं क्रति॥ सुपात्रवत् क्रति॥ ३९॥
 ॐ मा मवपुत्रा पा नमि ता सगी यमा ना मुद्रा पा नमि ता संगति न ता नव सर्व कृता पति गहा नया॥ ७ व वृद्धं पुत्रं पति अम ध पित व मि तु पा य को
 गेलं चा परिणत उदा नरं वृद्धा नो र गव ता म हि वा धि स कं अ म ष्य ति॥ अ म ष्य ति ग ता अ म ष्य ति लो क भा गो अ म ष्य ति सो ना म्ना त था ग ता न स म
 कं वृ ष्ण व रू रि वा धि स त्व अ व का नां ग ते र्द इ रि वा धि स त्व म हा अ व क स ह म्भे व रू रि वा धि स त्व अ व क का रि रि व रू रि वा धि स त्व अ व क का रि
 न ते र्द इ रि वा धि स त्व अ व क का रि स ह म्भे व रू रि वा धि स त्व अ व क का रि ग त स ह म्भे व रू रि वा धि स त्व अ व क का रि नि यू त स त स ह म्भेः पति
 वृत्तः॥ पुनस्तु ता धर्मिण्यति॥ यथैव लपुनः कोशिक कूल पुत्रा वा ॐ मा नव दृष्टा न्स्वप्राप्तु क्रति॥ समसृत्वमेव स्यति सुखं च पु
 ति विहीत्यति॥ उक्तः प्रतिकर्षं कार्यं सुखं पुति संवदयिष्यति॥ लपुनश्चैव पुति संवदयिष्यति॥ न चास्यापि प्रातः पाहा न गृह्या चिरं संत

ति रूपं स्यात्॥ मद्रका चा स्या हा न संस्कार विषयति॥ तत्र अपि नाम स कोशिक रिज्ञा परिगम चात्र स्य समा धव्युक्ति तस्यम॥ नसिका नपत्रिनिष्यदिः
 तन चिरे न न व न व ति आ हा न गृहि र्भवति॥ मद्रका चा स्या हा न संस्कार वति॥ ७ व मेव कोशिक तस्य कूलपुत्र स्यात्वा कूलइति तुर्वान वलवति आ हा न गृ
 हि र्भवति॥ मद्रका चा स्या हा न संस्कार विषयति॥ तत्र सहा न वंस्त्र त कोशिक तवति॥ यथापि नाम पुद्रा पा नमि ता लो वना मा गम न म्भे कं ल स्य
 कूलपुत्र स्यात्वा कूलइति तुर्वान अ के स्या म नू ष्या का य उ उ प सं ह रू व म्भे स्य न॥ ॐ मा मपि स कोशिक कूलपुत्रा वा कूलइति ता वा दृष्ट आम्बिकं कान
 गृह्य न्यत्रिगहायति॥ पुनत्रपत्रं कोशिक यः कूलपुत्रा वा कूलइति ता वा ॐ मा पुद्रा पा नमि ता लिखित्वाः पुस्तका तां कृत्वा पुत्रा पुर्वं ग मं स्ता पयन्तीः
 रुद्रि मा न्न अत्र यत्र वा च यत्र पथ्य वा पुया न्प्रवर्तयन् यत्र यत्रो पदिता दिना स्वाध्याय दय भवतः स कोशिक कूलपुत्रा वा कूलइति ता वा वइत
 नं पुत्रं पुसवति॥ यः कूलपुत्रा वा कूलइति ता वा ॐ मा पुद्रा पा नमि ता म हि प्र द ध द व क स्य य न्नि म्चा पु स न्नि चि र वा क म चि र मू त्या या अ य न॥ ७
 ॐ पा इ रु द्नी या दान य द्वा च य त्थ य वा पु या न्प्रवर्तयन् यत्र यत्रो पदिता स्वाध्याय दय भवतः स कोशिक कूलपुत्रा वा कूलइति ता वा वइत
 नं यथा धि क्पा च पुद्रा पा इ त्रि मि मा न्ना मा प क्ता न क लः पुस्तका ता म पि कृत्वा अत्र यत्रो पयत्सु म्भे वि न स्ति ति ह तो मी वृद्ध न ग्री स म्भे क्ता रू त्मा
 स ह म्भे नि क्ता नं वा धि स त्व म हा स त्वा ना अ न्ना न्ना हा प सं हा नः कृ ता र वि ष्य ति॥ न त्पु र्वे क स्ये ने ति॥ ता न्मे नां प्र कृ ता पा न मि तां स कृ त्वा म्भे रू द्वा

प्रह्लाद
फ
७

तत् ॥ अपि न को भिकार व न ती न धनि न भगता अर्ह नः संम कं वृद्धा न नृल ना सम्य कं वाधि मरि सं मृद्धा स पि को भि क षु मा भव प्रह्ला पा न मि
ता माग म्या नृल नां सम्य कं वाधि मरि सं वृद्धाः अपि न को भि क र विष नृल ना ग त ध नि न भगता अर्ह नः ॥ सम्य कं वृद्धा स पि को भि क षु मा भव
प्रह्ला पा न मि ता माग म्या नृल नां सम्य कं वाधि मरि सं मृद्धा स क ॥ अपि न को भि क म नृ त क पु म य ष सं ख य ष ला व अ उ ष वृद्धा र ग व न कि क नि धि य क
या य क नि न पि को भि क वृद्धा र ग व न षु मा भव प्रह्ला पा न मि ता माग म्या नृल नां सम्य कं वाधि मरि सं वृद्धाः ॥ अह म पि को भि क नृ त र्हि न भग ता र्हि सम्य कं
वृद्ध षु मा भव प्रह्ला पा न मि ता माग म्या नृल नां सम्य कं वाधि मरि सं वृद्धाः ॥ नृ व मू कं भ क्रा द वा ना मि द्यु र ग व न म त द वा च न ॥ महा पा न मि त मं र ग व न इ
त पु ह्ला पा न मि ता म र्व स त्वा नां हि र ग व न भग ता र्हि सम्य कं वृद्धा थि ल च रि ता नि सं म्य कं ज्ञा ना ति । सं प ष्थ ति ॥ र ग वा ना ह ॥ नृ व भव को भि क व म त नृ त थ
हे को भि क या वा धि स त्वः दी र्घ ना तं पु ह्ला पा न मि ता यां च ने ति ॥ त न स र्व स त्वा नां चि ल च रि ता नि पु ह्ला पा न मि ता यां स म्य क ज्ञा ना ति । सं प ष्थ ति ॥ अ थ र व र्ण म क्रा द
वा ना मि द्यु र ग व न म त द वा च न ॥ कि म् ग व नृ ह्ला पा न मि ता यां भव वा धि स त्वा म हा स त्व थ ने ति । ना न्या स प त्र मि ता स र ग वा ना ह ॥ स र्वी स को भि क वृ ष पा न
मि ता स वा धि स त्वा म हा स त्व थ ने ति ॥ अपि तु र व ल पु नः को भि क प्रह्ला पा न मि ते वा उ र्व र्ण ग माः त्व स्य म हा स त्व स्य पु ह्ला पा न मि ते वा उ र्व र्ण म न च को भि कः
आ मां ब र्ण पा न मि ता ना म्पा य को भि क स प त्र मि ता नां पु ह्ला पा न मि ता प त्र मि ता ना मि ता नां विः ॥ अ वा च ना ना क र ल म्प ल य त ॥ त य थ वि ना म

को भि क षु मा भव प्रह्ला पा न मि ता नां व र्ण ना ना स र्वा ना । ना ना प त्र ना ना पृ ष्ठा ना ना द ला ना ना इ प्रा ह प त्रि ल ह सं य त्रा । न च र्ण पां क्रा त्वां च्छा या या वि ल षा य
ना ना क र ल म्प ल य त ॥ अपि तु क्रा या क्रा य स वं सं र वा ङ्ग कृ नि ॥ नृ व भव को भि क आ मां ब र्ण पा न मि ता नां म्पा य को भि क स प त्र मि ता नां पु ह्ला पा न मि
ता प त्र मि ता नां स र्वी स प त्र मि ता ना न वि ल षा ना च ना ना क र ल म्प ल य त ॥ नृ व मू कं भ क्रा द वा ना मि द्यु र ग व न म त द वा च न ॥ महा गे ल म म य
ग तं य र ग व न इ त पु ह्ला पा न मि ता ॥ अ पु म य ७ ॥ स म न्वा ग त य र ग व न इ त पु ह्ला पा न मि ता ॥ अ प र्थ क ७ ॥ स म न्वा ग य र ग व न इ त पु ह्ला पा न मि ता ॥
॥ आ र्थी ह स र्ग मि का यां पु ह्ला पा न मि ता यां ७ न प त्रि की र्त्त न प त्रि व र्ण ना म च र्थः ॥ ॥ अ थ र व र्ण म क्रा द वा ना मि द्यु र ग व न म त
द वा च न ॥ या र ग व नृ ल पु त्रा वा क ल इ हि ता वा षु मां पु ह्ला पा न मि ता म ति ग द ध वे द व क ल य य व धि म् च पु स न चि ल वा ध य चि ल म्प स त्वा या धा ग य न
॥ नृ यो इ नृ क्री या द्वा त म वा च म प र्थ वा पु या नृ व त य द ग म इ प दि ण इ दि ॥ अ थ अ य त्प न र व वि ल न र सं पु का ग य द र्थ म स्या वि द व मा म
सा न्ध वा क र । य थ अ धि क या च पु ह्ला पा न मि ता मां मा मा प द्वा ता क र । पु स्त क ग ता म धि कृ त्वा अ न य स्य प म स ध म् चि न स त्ति ह ता म् वृ द्ध न ग्री स म
चं द्रा त्मा स र्व म्मी क र्ध न वा धि स त्वा नां म हा स त्वा नां अ नृ ग हा प सं हा नः कृ ना र वि ष ति । न त्प र्व क ल य ने ति । नृ व मि म वि द ग र्वा त्वा नृ व म हा
रि का व तं मं पु ह्ला पा न मि तां नृ वं म हा नृ सं सा ॥ नृ वं म हा र्ण ॥ नृ वं म हा वि षा का व तं मं पु ह्ला पा न मि ता । नृ वं व र्ण म हा ७ ॥ स म न्वा ग ता व त य पु ह्ला

प्रह
क
ति

अथ यच्चिरुमत्यायसमत्यादिनवाधिविरायाधिसत्तायाश्च नदद्यादकमालिरवनायापिवाचनायापिचकिलाभित्तमासंपादयइका
इमज्जाहयत्समरुयित्समादापयत्समरुजयत्संप्रहर्षयद्वाचान्पणिविनयत्पुनर्यत्तमर्थमप्याश्रमेसंपुण्यसवंवास्यविरुविष्म
धयिष्यति॥निर्विकित्तकविषयि॥नवंनवकनदित्वंकलपुत्रास्मिन्नववाधिसत्त्वामर्तितुवात्रहित्वंमिक्तमानधनंन्यामकुमानःकिपुमवा
नृत्तनामासम्यक्कंवाधिमहिसम्मात्स्यम॥अहिसंवृद्धचापनिमित्तं सत्त्वधनुमनृत्तनउपधि संकथइतिविनय सिमइतहृत्काठिपुहावनतामामि
त्ययंकोमिककलपुत्रावाकलइदित्वावापनिपादुधततःवीरिकाकलपुत्राकलइदितुर्वासकाभइतनंप्रत्युपसवत्तितुउतवलपुनः
कोमिककजम्बुद्वीपसर्वसत्त्वानुतनकोमिकपय्यीधन॥यपित्तकोमिकचातुर्मीहाविपकलाकधनोसत्त्वानानपिसर्वीकेधिदवकलपुत्रावा
कलइदित्वावादससुकसलषुकर्मपत्थसमादापयन्युतिस्मापयतःतिष्ठउतवलपुनःकोमिकचातुर्मीहाविपकलाकधनोसर्वसत्त्वान
नपय्यीधनयपित्तकोमिकसाहज्योचुठिकायांलाकधनोसत्त्वाननपिसर्वीकेधिदवकलपुत्रावाकलइदित्वावादससुकसलषुकर्मपत्थ
समादापयन्युतिस्मापयतःतिष्ठउतवलपुनःकोमिकदि साहज्यमधमलाकधनोसर्वसत्त्वानुतनपय्यीधनयपित्तकोमिकठिसाहज्यम
हासाहज्यलाकधनोसर्वसत्त्वाननपिसर्वीकेधिदवकलपुत्रावाकलइदित्वावादससुकसलषुकर्मपत्थसमादापयन्युतिस्मापय

त॥तिष्ठउतवलपुनःकोमिकदि साहज्यमधमलाकधनोसर्वसत्त्वानुतनकोमिकपय्यीधनयपित्तकोमिकचातुर्मीहाविपकलाकधनोसर्वसत्त्वान
नपय्यीधनयपित्तकोमिकसाहज्योचुठिकायांलाकधनोसत्त्वाननपिसर्वीकेधिदवकलपुत्रावाकलइदित्वावादससुकसलषुकर्मपत्थ
समादापयन्युतिस्मापयतःतिष्ठउतवलपुनःकोमिकदि साहज्यमधमलाकधनोसर्वसत्त्वानुतनपय्यीधनयपित्तकोमिकठिसाहज्यम
हासाहज्यलाकधनोसर्वसत्त्वाननपिसर्वीकेधिदवकलपुत्रावाकलइदित्वावादससुकसलषुकर्मपत्थसमादापयन्युतिस्मापय
त॥तिष्ठउतवलपुनःकोमिकदि साहज्यमधमलाकधनोसर्वसत्त्वानुतनकोमिकपय्यीधनयपित्तकोमिकचातुर्मीहाविपकलाकधनोसर्वसत्त्वान
नपय्यीधनयपित्तकोमिकसाहज्योचुठिकायांलाकधनोसत्त्वाननपिसर्वीकेधिदवकलपुत्रावाकलइदित्वावादससुकसलषुकर्मपत्थ
समादापयन्युतिस्मापयतःतिष्ठउतवलपुनःकोमिकदि साहज्यमधमलाकधनोसर्वसत्त्वानुतनपय्यीधनयपित्तकोमिकठिसाहज्यम
हासाहज्यलाकधनोसर्वसत्त्वाननपिसर्वीकेधिदवकलपुत्रावाकलइदित्वावादससुकसलषुकर्मपत्थसमादापयन्युतिस्मापय

क
क

हिसा स्यावत्समासा सुखा धनं य समापत्तरिहा सुप्रतिष्ठापयति किमन्यस कोसिक अथि न संकलपुत्रा वा कलइहि तावाः तता निदानं वरुपुह्य पुसवत् ॥
गुरु श्रुह ॥ वरुत्तगवन्वसुगत । हगवानाह ॥ अतः खलपुनः संकोकि ककुलपुत्रा वा कलइहि तावा वरुत्तनं पुत्थं पुसवत् ॥ यं भू मा प्रह्ला पा न मिता मक भ
पुसक गतामपि कत्वा इति दधदहि दधत अव कस्य वै विद्वन्व कलपयत अथि मुख न धिमुख न । पुस व चित् ॥ पुस व चित् ॥ यथा स य स म्य नो इधम
सम्य न्नाम वा धय चित् मूत्या य समूत्या दित वा धि चित् य वा धि सुवा या ध्या न य न दद्या द क लिलित ना या पि वा च ना या पि अकि ला हित या सम्या द धि ध्यति उभ
को मुद्रा । इ धि ध्यति स न ग धि ध्यति समा दा य धि ध्यति म ह र धि ध्यति । स म्य ह र धि ध्यति वा न ध्यति दि न ध्यति न न ध्यत्य थ म स्या अस्मै सम्य का धि ध्य
थ वं वा स्य चित् ॥ यथा धि ध्यति निर्वि चि कि त्सं क त्रि ध्य ध व ॥ न म क ल प त्वा स्मि न्न व वा धि स त्वा मा त्रि भि क म्वा द्दि त्वं को भि क भि क मा न ध्य
न्या य कु मो लः कि पु भि वा न र ता स म्य कं धा धि म हि स मा स्या म ॥ अ रि सं मू द्वा प त्रि मि तं स त्वा ध नु म न र न उ प धि सं क य र हि वि न ध्य सि म र त त त को टि पु
ह व न ता या मि ति ॥ ति क्तु त्वा ल पु न को भि क र म्वा ध प का स र्व स त्वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा सं स्का रा न न व यी य न य प
न को भि क च त्वा म्मि हा दि प के ला क धा गो सु त्वा स्मा न पि स र्वी क वि द व क ल पु त्रा क ल इ हि ता वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा ति क्तु त्वा ल
पु नः को भि क च त्वा म्मि हा के ला क धा गो स र्वी स त्वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा रि सं स्का रा य पि त को भि क सा ह म्भु ति का यो ला क धा

५-१

तो स र्वी स त्वा स्मा न पि स त्वा क वि द व क ल पु त्रा वा क ल इ हि ता वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा ति क्तु त्वा ल पु नः को भि क सा ह
पु च्च ति का यो ला क धा गो स र्वी स त्वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा रि सं स्का रा य पि त को भि क सा ह म्भु म ध्वा ला क धा गो सु
स्मा न पि स र्वी क वि द व क ल पु त्रा वा क ल इ हि ता वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा ति क्तु त्वा ल पु नः को भि क सा ह म्भु म ध्वा
ला क धा गो स र्वी स त्वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा रि सं स्का रा य पि त को भि क सा ह म्भु म ध्वा ला क धा गो स त्वा स्मा न पि
स र्वी क वि द व क ल पु त्रा वा क ल इ हि ता वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा ति क्तु त्वा ल पु नः को भि क सा ह म्भु म ध्वा ला क धा गो
क धा गो स व स त्वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा रि सं स्का रा य पि त को भि क सा ह म्भु म ध्वा ला क धा गो स त्वा स्मा न पि
सा ह म्भु म ध्वा ला क धा गो स त्वा स्मा न पि स र्वी क वि द व क ल पु त्रा वा क ल इ हि ता वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा ति क्तु त्वा ल
त कि म न्यु स्य को भि क अ थि न सं क ल पु त्रा वा क ल इ हि ता वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा ति क्तु त्वा ल पु नः को भि क
ल पु नः सं को भि क क ल पु त्रा वा क ल इ हि ता वा ध्वा ना पु मा ल नू य स मा प त्तरि हा सु प्र ति ष्ठा प य त्वा ति क्तु त्वा ल पु नः को भि क सा ह म्भु म ध्वा ला क धा गो
अ व क ल य नू व क ल य त र धि मुख न धि मुख न पु स न चित् ॥ पु स न चित् ॥ यथा स य स म्य नो इधम स य स म्य नो धि चित् मूत्या य स मूत्या दित वा धि चित् य वा धि

[illegible][illegible]

पुरु

फ

सम्यग्नाइधममसम्यग्नायवाधयचिरमृत्वायसमृत्वादिनवाधिविरुयवाधिसत्वायवाधमनदद्यादकल्लित्वनायापिवाचनायापिअकिलासितयास
 म्यादधिष्यत्तुकाइमृगाहियिष्यतिसदभायिष्यतिसमादापयिष्यतिसमरुजयिष्यति।संपुहर्षयिष्यतिवाचनयतिविनयति।अननयत्तुथमस्याअ
 स्मेसंपुकाययिष्यत्तुवंचास्यविरुंविमधयिष्यतिनिर्विचिकित्संकनियत्तुवंचेनवकृति।उहित्वंकुलपुत्राभि।वुववाधिसत्त्वमात्तुमिजुम्युहित्वं
 भिकुमातयत्तुय्यायकमातः।जिपुमवानुनांसम्यकंवाधिमरिसमात्तुम।अरिसंवकाचापनिमित्तं सत्वकाउमनुरुनउपधि संरुधंरहिविनयति
 मइतत्तुतकाटिपुलावनय्यामिति॥नुवकावाचमाधत्तु॥नुतेषामवत्वंकुलपुत्रधमीलंलारित्वमइतपुलापात्रमिताप्रतिसंयुक्तामिति।अयमव
 कोमिकततःपोरुकाकुलपुत्रतःकुलइहित्वावाप्तकाभइततंपुहंपुत्रवत्तु।तत्कस्यहतात्रगाहि कोमिक।अतत्रापहितुलंपुलायत।तिष्ठ
 उखलपुनःकोमिकतत्रमूदीपकासर्वसत्त्वान्।अतत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु।संस्कात्रायावक्तुः॥कोमिकचातुमीहादीपकलाकधनोः
 सत्त्वास्मानपिसर्वीकश्चिदवकुलपुत्रावाकुलइहित्वावाप्तत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु॥तिष्ठउखलपुनःकोमिकचातुमहादीपकलाकधः
 कोसर्वसत्त्वावाप्तत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु।संस्कात्रायावक्तुःकोमिकसाहस्यंचूठिकायांलाकधनीसत्त्वास्मानपिसर्वीकश्चिदवकु
 लपुत्रावाकुलइहित्वावाप्तत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु॥तिष्ठउखलपुनःकोमिकसाहस्यंचूठिकायांलाकधनीसर्वसत्त्वान्।अतत्रापहितु

५७

कुलपुतिष्ठापयत्तु।संस्कात्रायावक्तुःकोमिकद्विसाहस्रमध्यमलाकधनोसत्त्वास्मानपिसर्वीकश्चिदवकुलपुत्रावाकुलइहित्वावाप्तत्रापहितु
 पुतिष्ठापयत्तु॥तिष्ठउखलपुनःकोमिकद्विसाहस्रमध्यमलाकधनोसर्वसत्त्वान्।अतत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु।संस्कात्रायावक्तुःकोमिक
 त्रिसाहस्रमहासाहस्रलाकधनोसत्त्वास्मानपिसर्वीकश्चिदवकुलपुत्रावाकुलइहित्वावाप्तत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु॥तिष्ठउखलपुनःकोमिकत्रि
 साहस्रमहासाहस्रलाकधनोसर्वसत्त्वान्।अतत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु।संस्कात्रायावक्तुःकोमिकतंगमनदिवाल्कापमृष्टिसाहस्रमहासाहस्र
 षुलाकधनसुसत्त्वास्मानपिसर्वीकश्चिदवकुलपुत्रावाकुलइहित्वावाप्तत्रापहितुलंपुतिष्ठापयत्तु।तत्कस्यहतात्रगाहि कोमिक।अतत्रापहितुलंपु
 हितावाततानिदानवइत्युहंपुसंवत्॥शक्राह॥वइतगवन्इत्युगत॥रगवानाह॥अतःखलपुनःकोमिककुलपुत्रावाकुलइहित्वावावइततंपुहं
 प्रसवतयत्तुमापुलापात्रमितामनेनःपुस्तकगतामपिकत्तुश्रिइधदरिइधधतत्रवकत्ययन्नवकत्ययत्तु।अधिमध्वन्नधिमध्वन्नपुसत्रवि
 लुपुसनवित्तुयअधमसमसम्यग्नाइधममसम्यग्नायवाधयचिरमृत्वायसमृत्वादिनवाधिविरुयवाधिसत्वायवाधमनदद्यादकल्लित्वनायापिवाचनायापिअकिलासितयासंपादयि
 यवाधयचिरमृत्वायसमृत्वादिनवाधिविरुयवाधिसत्वायवाधमनदद्यादकल्लित्वनायापिवाचनायापिअकिलासितयासंपादयि एधुका
 इमृगाहियिष्यति।सदभायिष्यतिसमादापयिष्यती समरुजयिष्यतिसंपुहर्षयिष्यतिवाचनयतिविनयति।अननयत्तुथमस्याअस्मेसंपुकाययि

॥ प्रश्न ॥

ह
३

ता

न पुष्पाय नमि ता पुति सं युक्ता मिति ॥ अथ प्रवत ता वरुत नं प्रत्यु स वत ॥ तत्क स्य हता त ता हि को भिक नर्ह त्वं प्र ता वा त ॥ न वं चा स ॥ ता हं व धी
 धि व्यति पथ यथ त्वं कल पुत्र पुष्पा या नमि ता यां भि कि ष स ॥ तथ नथ त्वं म नृ पूर्व त वृद्ध ध मी त ला हि ह वि व्य सि ॥ अथ नथ र वि व्य सि ॥ अ न
 ल ता याः सम्य कं वा धः अ नृ ह त्वं भि क्ता यां भि क्ता मा तथ नृ न वा य क मा नः ॥ आ न थ प रि ह लं पु ला व भि व्य सि सं क दा ग भि रू लं पु ला व भि व्य सि ॥ अ ना ग भि रू
 लं पु ला व भि व्य सि ॥ अ नृ ह त्वं प्र ता व भि व्य सि ॥ अ नृ क वृ द्ध त्वं प्र ता व भि व्य सि ॥ सम्य क वृ द्ध त्वं प्र ता व भि व्य सि मिति ॥ ति क्क तु त्व ल पु नः को भिक नृ मृ धि प का मृ व सि
 ला नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक चा तु म हा द्वा प क ला क धा गो स त्वा स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का
 प थ त ति क्क तु त्व ल पु नः को भिक चा तु म हा द्वा प क ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का ला या व नः को भिक सा ह म्मां वृ ठि का यां ला क धा गो स त्वा
 स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का ला या व नः को भिक सा ह म्मां वृ ठि का यां ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व
 त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक वि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स त्वा स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का
 क दि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक वि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स त्वा स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु
 ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक वि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को

भि क रां ग म न दि वा ल का प म प्र षु ति सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स त्वा स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का
 न्य म को भिक अ पि न सं क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा त नी ति दा न व रू प थ प्र स व त् ॥ अ नृ क आ ह ॥ व रू त ग व व रू त ग म ॥ त ग वा ना ह ॥ अ नृ व ल पु नः सं को भिक क
 ल पु ला वा क ल इ हि ता वा व रू त ग न प्र थ प्र स व त् ॥ य ष्ठ मा प्र ष्ठा या न मि ता म न क णः प्र स क ग ता म पि क्त्वा अ रि षु द्ध द रि षु द्ध न अ व क ल य म न व क ल य म न अ
 धि मृ ध न धि मृ ध न पु म न वि रुः प्र स व चि ला यां ध म म स म्मां त्रा इ धा ण म स म्मां त्रा य वा धा य चि रु मृ त्या य स मृ त्या दि त वा धि चि ला य वा धि स त्वा य अ ध म
 ध न द या द न रू प लि त्व ना या पि वा च ना या य कि ना मि त या स म्मां द पि य त्प र्म को इ मृ ता ह पि य ति मे न र्ध पि य ति स मा दा प पि य ति स म रू क पि य ति सं पु
 र्ध पि य ति ॥ वा चा ने य ति वि न य त्प र्म म त्या अ म्मे सं पु का ण पि य ति न व ध्म स्य चि रु वि रू म ध पि य ति नि र्बि चि कि त्मं क रि य ति ॥ न वं च व क ल य हि त्वं कः
 ल पु ला मि न व वा धि स त्व मा रू गी भि क्ता वृ द्ध त्वं सि क्ता मा तथ नृ न वा य क मा नः कि प्र म वा नृ तां स म्य कं वा धि म रि सं हा त्प र्म ॥ अ रि स म्मां वा चा प मि
 तं स त्व धा ल म न रू त उप धि स क्क य इ रि वि न य सि ॥ य इ त रू त का दि पु ला व न ता मा मि ति ॥ न वं च वा च म्मां ध नः नृ त था म व त्वं क ल पु त्र ध मी त ला हि ह व त्प इ त
 पु ष्पा या न मि ता पु ति सं यु क्ता ना मि ति ॥ अथ प्र व त ता वरुत नं प्रत्यु स वत ॥ तत्क स्य हता त ता हि को भिक नर्ह त्वं प्र ता वा त ॥ न वं चा स ॥ ता हं व धि
 धि व्यति पथ यथ त्वं कल पुत्र पुष्पा या नमि ता यां भि कि ष स ॥ तथ नथ त्वं म नृ पूर्व त वृद्ध ध मी त ला हि ह वि व्य सि ॥ अथ नथ र वि व्य सि ॥ अ न
 ल ता याः सम्य कं वा धः अ नृ ह त्वं भि क्ता यां भि क्ता मा तथ नृ न वा य क मा नः ॥ आ न थ प रि ह लं पु ला व भि व्य सि सं क दा ग भि रू लं पु ला व भि व्य सि ॥ अ ना ग भि रू
 लं पु ला व भि व्य सि ॥ अ नृ ह त्वं प्र ता व भि व्य सि ॥ अ नृ क वृ द्ध त्वं प्र ता व भि व्य सि ॥ सम्य क वृ द्ध त्वं प्र ता व भि व्य सि मिति ॥ ति क्क तु त्व ल पु नः को भिक नृ मृ धि प का मृ व सि
 ला नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक चा तु म हा द्वा प क ला क धा गो स त्वा स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का
 प थ त ति क्क तु त्व ल पु नः को भिक चा तु म हा द्वा प क ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का ला या व नः को भिक सा ह म्मां वृ ठि का यां ला क धा गो स त्वा
 स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का ला या व नः को भिक सा ह म्मां वृ ठि का यां ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व
 त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक वि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स त्वा स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का
 क दि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक वि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स त्वा स्ता न पि स र्वा न्क थि द व क ल पु
 ला वा क ल इ हि ता वा अ नृ ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को भिक वि सा ह म्मां म हा म हा ला क धा गो स र्वा स त्वा नर्ह त्वं पु ति क्का य व त्प रि सं स्का रा या व नः को

॥ ५ ॥ राया सम्यक् वात्सेविरु मत्ता दयत् ॥ यथा न्यः कश्चि लोभिक कलपुत्रा वा कलइ हिता वा तेषां सर्वेषां मन्त्रा रायां सम्यक् वात्सेविरु मत्ता यत्त एष मा प्ररु
 पानमितां लिखित्वा दद्याद्वा वा कोभिक कलपुत्रा वा कलइ हिता वा अविनिवर्त्तया यवाधिसत्ता यमहा सात्वा यत्त नां प्ररु पात्रमितां लिखित्वा दद्याद्वा यना मयदुष्टे
 प्ररु पात्रमितां यो भि क्रियते योगमापत्यतः पुनरप्ययं प्ररु पात्रमितां ह्यस्या मा प्रयातावना वद्वि म्बिपुत्रां पत्रिपुत्रि धिष्यतीति ॥ अथ कोभिक ततः धीर्बः
 कोन्कलपुत्रः कलइ हिता वा साकांशमवकृतं प्रत्यमु सवत् ॥ तत्कम्यता विमर्शनां शत्रु नां सम्यक् वाधिसति सम्बुद्धा सत्ता नां इः खस्यानं कत्रिष्यतीति
 ॥ पुनरप्ययं कोभिक यावन्नाश्रमद्विप सत्ता स सर्वत्र विनिवर्त्तनि या रवयु न नृत्त रायाः सम्यक् वात्सेः कश्चिदव कलपुत्रा वा कलइ हिता वा अत्र नृत्त नां सम्य
 कं वाधिसति संप्रसिद्धः कल्पः ॥ मां प्ररु पात्रमितां प्ररु लिखितं कत्वा दद्याद्वा यना मयत् ॥ यथा न्यः कश्चिदव कलपुत्रा वा कलइ हिता वा ष्ठ मां प्ररु पात्रमितां प्ररु
 कलिखितं कत्वा दद्याद्वा यना मयत्साथं सव्यञ्जना मयदिता ॥ तस्मिन्मन्यसकोभिक अपि न स कलपुत्रा वा कलइ हिता वा तानि दानवकृप्यं प्रसवत् ॥ अकः
 आहवा वद्वत्तमवचरु सगता ॥ संख्यापितगवत्सु स्य प्रत्यक्षं स्य न स कना कर्तुं गत्वा नाप्यपमापीपममयपनिष्मपिउपनिषदपि रगवंसु स्य प्रत्यक्षं स्य न स
 कना कर्तुं गत्वा नाह ॥ अतः खलपुनः सकोभिक कलपुत्रा वा कलइ हिता वा वद्वत्तं प्रत्यमु सवत् ॥ यस्याम विवर्त्तताया नां वाधिसत्ता ना महा सत्ता नां क्रियतन
 मन्त्रा नां सम्यक् वाधिसति सम्बुद्धा काम स ष्ठ मां प्ररु पात्रमितां प्ररु कलिखितं कत्वा दद्याद्वा यना मयत्साथं सव्यञ्जना मयदिता दिवतां प्ररु पात्रमिताम

॥ ५ ॥

ववददवमिष्यात् ॥ तिष्ठतु वदपुनः कोभिक कलपुत्रा वा कलइ हिता वा तेषां सर्वेषां मन्त्रा रायां सम्यक् वात्सेविरु मत्ता यत्त एष मा प्ररु
 पात्रमितां लिखित्वा दद्याद्वा वा कोभिक कलपुत्रा वा कलइ हिता वा अविनिवर्त्तया यवाधिसत्ता यमहा सात्वा यत्त नां प्ररु पात्रमितां लिखित्वा दद्याद्वा यना मयदुष्टे
 प्ररु पात्रमितां यो भि क्रियते योगमापत्यतः पुनरप्ययं प्ररु पात्रमितां ह्यस्या मा प्रयातावना वद्वि म्बिपुत्रां पत्रिपुत्रि धिष्यतीति ॥ अथ कोभिक ततः धीर्बः
 कोन्कलपुत्रः कलइ हिता वा साकांशमवकृतं प्रत्यमु सवत् ॥ तत्कम्यता विमर्शनां शत्रु नां सम्यक् वाधिसति सम्बुद्धा सत्ता नां इः खस्यानं कत्रिष्यतीति
 ॥ पुनरप्ययं कोभिक यावन्नाश्रमद्विप सत्ता स सर्वत्र विनिवर्त्तनि या रवयु न नृत्त रायाः सम्यक् वात्सेः कश्चिदव कलपुत्रा वा कलइ हिता वा अत्र नृत्त नां सम्य
 कं वाधिसति संप्रसिद्धः कल्पः ॥ मां प्ररु पात्रमितां प्ररु लिखितं कत्वा दद्याद्वा यना मयत् ॥ यथा न्यः कश्चिदव कलपुत्रा वा कलइ हिता वा ष्ठ मां प्ररु पात्रमितां प्ररु
 कलिखितं कत्वा दद्याद्वा यना मयत्साथं सव्यञ्जना मयदिता ॥ तस्मिन्मन्यसकोभिक अपि न स कलपुत्रा वा कलइ हिता वा तानि दानवकृप्यं प्रसवत् ॥ अकः
 आहवा वद्वत्तमवचरु सगता ॥ संख्यापितगवत्सु स्य प्रत्यक्षं स्य न स कना कर्तुं गत्वा नाप्यपमापीपममयपनिष्मपिउपनिषदपि रगवंसु स्य प्रत्यक्षं स्य न स
 कना कर्तुं गत्वा नाह ॥ अतः खलपुनः सकोभिक कलपुत्रा वा कलइ हिता वा वद्वत्तं प्रत्यमु सवत् ॥ यस्याम विवर्त्तताया नां वाधिसत्ता ना महा सत्ता नां क्रियतन
 मन्त्रा नां सम्यक् वाधिसति सम्बुद्धा काम स ष्ठ मां प्ररु पात्रमितां प्ररु कलिखितं कत्वा दद्याद्वा यना मयत्साथं सव्यञ्जना मयदिता दिवतां प्ररु पात्रमिताम

॥ प्रज्ञा ॥

५५

[illegible]

॥ ५ ॥

विष्णुनारायणमितापुत्रिसंस्कानि। सर्वरूपा न संप्रयुति संस्कानि। कृष्णरूपा नि। याच हिते चिता याच महा मेतु याच महा कल ना याचा पु मय
संख्या वृद्धा लया चा नरु नासम्य कं वाधि र्मिवा नरु नं सम्य कं वाधि सुख याच सर्वधर्मो व्य र्मिवा नमिता या व्य पत्रि मया १। नरि हतः सर्वरि हतः न
मम्युहा रि संस्का नः यद्योत्रा वन ह म संग सुपु रि हत म म म म म म म न प म म प त्रि म य सु थ ग म म म ह त हू न व लं य दू ह हू न व लं व ल नां य दू ह
हू न द र्शनं याच द श व ल पा न मिता य म्य तु वै र्म न य प न म सु प त्रि हू ३ धि ग मा य म्य सर्वध र्मी त्म प न मा र्म रि नि र्हा न त ध र्मी धि ग मा य म्य ध र्मी च
कृ प व र्ण न ध र्मी का प्र ग ह ल र्म रि त्रा संपु ता उ नं ध र्मी मं र व पु र्ण र्ध र्मी मं र व पु र्ण ह न तं ध र्मी र व पु र्ण संपु ह न तं ध र्मी व षि पु व र्ध हं ध र्मी य रू य नं
ध र्मी दान नं सर्व सत् स न र्प नं। सु पु वा न तं। य च न न ध र्मी द श नां सु वृ द्ध ध र्मी षू भ व क ध र्मी षू वा वि नी ताः॥ गि रि वा अ धि मू का नि य ताः स म्वा धि य
ग म ह म षा क्क स र्व षां या नि कृ ण रू पानि य च नं वृ षि त्ग व हि र्वा धि सत्वा म हा सत्वा वा क ता अ न रू ना यां स म्य क्क वा र्म न षा क्क स र्व षां या नि कृ ण
रू पानि य त्पा न मिता पु त्रि संस्कानि य च पु र्ण क वृ द्ध या नि काः पु रू लाः वा क ताः पु र्ण क वा र्म न षां क्क स र्व षां या नि कृ ण रू पानि य च नं भ व कः
या नि क तां पु रू लाः नां वा न म यं प ह क्रि या व म्मु ण ल म य म्मु त्पं क्रि या व म्मु ता व ना म य म्मु त्पं क्रि या व म्मु या नि च सै क्का त्पं ना म्मु वा ति कृ ण रू पानि। या नि
चा सै क्का त्पं ना म्मु वा ति कृ ण रू पानि। ये म्य प ध र्म न स्तु ध र्मी कृ ण रू पानि न्य व नो पी ता नि। न षां च वृ द्ध नां त ग व तां य त स्तु त्पं प र्वा रि श्मं रि

पुष्प ॥ मयि कुंभपादयाचिरुयाः समवधनामि। नचचिरुस्वरावमा सका पत्रि त्ममयि कुं॥ अथखरुणक्रा दवानामिडा आधुष्य सुतुतिं स्फु विनमनदवाच ता॥ मारुत्या
र्य सुतुत नवयानसंप्रसिता वाधिसत्त्वामहासत्वा ॥ मंनिर्दंशु त्वाउकुसिषु सकुसिषु मनुसमापत्स्य क। कथमार्यसत्तु न वाधिसत्त्वतमहासत्त्वानतदन्
मादना सहगतं प्रत्यक्रियावस्तु। अनुरुणये सम्यक् वाधमयप्रिनामयितव्यं कथं न मादना सहगतं प्रत्यक्रियावस्तु पत्रिग क्र ता अनुमादना सहगा कचिरु
पत्रिनामयता। तदनु मादना सहगतं चिरु मूपत्रिगृहातं सुपत्रिनामितं हवति॥ अथखत्वा यष्मा सुतुतिः स्फु विनामेतु यं वाधिसत्त्वामहासत्त्वमात्रत्यमे। तु यं वा
धिसत्त्वामहासत्त्वमधिसत्त्वानं कत्तामेतु यं वाधिसत्त्वामहासत्त्वमा मनु यतं स्म॥ ॥ ॥ मंनिर्दंशु यवाधिसत्त्वामहासत्त्वमपामतिता नां वक्ष नां रगवतां किं न वत्सनां कि
न वत्सनी नां किं न उपपक्ष एव न त्री का नां पय्यारुवाणा स्मंमर्दित क ॥ का नां स्वपक्षतला नात्ममनुपाक स्वकार्थ नां पत्रिचि न हवसे माज ना नां सम्यगम स्म सुविम
कचिरु नां सर्वचतावसिपनमपात्रमिताद्या फा नादगसुदि ॥ पुमया संख्येय प्रुति साहसमहासाहसु लोककथुषु न के कस्यां ग्यदि ॥ ॥ ॥ के कस्मिं ग्यदि माहसु महास
हसु लोककथो अपुमयाना संख्येयानां वक्ष नां मृगवतां पत्रिनिर्द ता नां यावन्नुथमचिरुपादमपादयायावन्नानुह नासंम्य कं वाधिमरि स म्बुद्धा नां यावन्नानुपधिः
रुणये निर्वी सत्त्वतो पत्रिनिर्द ता नां यावन्नानुपध्मी त्मकहित नुवस्मिन्न क प्रया निरुषां वक्ष ना मृगवतां कृणनमूला निपात्रमिताप्रुति संमृकानि। यथुषा वक्ष नां रगवतां
पुष्पा हिमंका जः॥ कृणलमूलानि संस्का प्रायुष्य तपा वक्ष नां रगवतां शात्रस्कन्धः समाधिस्कन्धः प्रसास्कन्धः विमकी स्कन्धः विमकी दण्डस्कन्धः तस्कन्धः याव हिनेषिता

[illegible]

वृ

वत्तनवाधिसत्त्वमहासत्त्वसंप्रभारिसंस्कारां संज्ञानि ननपनिष्ठा मयत्पनूलनायां सम्यक् वाक्ष्ये तत्कस्यहता सु अहिमतां पत्रिह म नामहि निविशतगुप्त
 वत्तननयेवं हवति सापिपुष्परि संस्कारा विविक्कः भस्मापदय नूमादनासहगतं पद्मा कुमावमु नदपिविविविकं सा कप्रितियत्रि नामयति ननूलया
 सम्यक् वाक्ष्ये सचदवमपि सज्ञानिग। सर्वसंस्काराः भस्मा विविक्का वृत्ति। नवमियं नस्य वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य पुष्पापानमिता। मयपित लुषां वृक्षनां
 गवतां पानिर्वा नां कुशलमूलमाह गदग नवसपुत्रिभमस्मा दृगभवत्कुशलमूलं यनापितत्यत्रिभमितं। तदपितज्ञाति कंतत्तु ज संतत्रिका यंतस्यह
 वं सचदुवं संज्ञा नीत नपनिनामिहं हवत्पनूलनाये सम्यक् वाक्ष्ये। तत्कस्यहताः नहि वृक्षहता वक्रानिभिरुपाग नपत्रि नाम नामस्य नूतान क्रियः
 द्याती नंततज्ञां निरुद्धं विगतं विपत्रिनंतं यदनागतं दय्यसुप्रा कं पुत्पुत्पत्र स्यस्मि तितापुत्रत्यत॥ यद्वनापलत्यत तत्रे वनिमितं नविषयः सचदवं
 त्रिमितिक नातिनसमन्वाहनति नपत्रिभमयत्पनूलनायां सम्यक् वाक्ष्ये। अथ स्मृतिवे कल्यानन निमित्तिक नाति नसमन्वाहलति॥ नमनसि
 क नाति स्मृतिवे कल्यानन ववाक्ष्ये ननमपिनपत्रिनामयत्पनूलनायां सम्यक् वाक्ष्ये। अथ तत्रिमितं समन्वाहनति नच निमित्तिक नात्य वपत्रि
 भमितं हवति। तत्कुशलमूलं वाधिसत्त्व नमहा सत्त्वं ना नूलनायां सम्यक् वाक्ष्ये। नवमगुवाधिसत्त्व नमहा सत्त्वं न निमित्तिक यमिदंतद्वाधिसत्त्वस्य म
 हासत्त्वस्यापायकोशल्ये वदितं य॥ यानना पाय कोशल्ये न कुशलमूलं पत्रिभममति। स भ्रावतः सर्वज्ञाया अत्रुपाय कोशल्ये निमित्तिक कामन
 न वाधिसत्त्व नमहा सत्त्वं न यमवपुष्पा नमिता इति कुं। अत व्याउरुदिन व्याध नपीत व्यावाचयित व्यापुर्वाय फ व्यापुर्वरु पित व्या। दशः

पितव्याउपदक व्याउदक व्यास्वाध्यात व्या पत्रिप्रसि कर्तव्या। तत्कस्यहता नहि पुष्पापा नमिता मनागम्य भ कं यमभुत वतापुष्पापा नमिता पत्रि ना
 मनाकि यापुर्वक कत्रुमनुवं वदस कं मनागम्य पुष्पापानमिता कप त्कि मावमु अ नूलनाया सम्यक् वाक्ष्ये पत्रिभमयिदु मिति। सचदं वाच वृत्ति स्यात्त
 नीयः तत्कस्यहता निरुद्धाहित जालमहा वा निरुद्धाहित संस्काराः भस्मा विविक्का विप्रहि ता उयुनधितः अयिल त्वलपूनः सपूरुत्ता निमित्तिकु ल्यविक
 ल्याचयथारु सयथारु तमथारु महीउपलम्भ मनुपलम्भ पत्रिभमयै लस्य कुले गे मूरं गवक नु वपत्रि नामित म नूलनायां सम्यक् वाक्ष्ये नास्य नूजा
 नकि। तत्कस्यहता नपनुवहि वस्य महा नूलनाया वति। यत्सपत्रिनिर्वह मयि वृक्षा नमृ गवतानि मित्तिक नातिविकल्पयति च आका नत वृ निर्वीत मयतस्य
 त॥ नचापलम्भ संज्ञी नतथागता अर्हकः सम्यक् वृक्षाः पत्रिभमनां महार्थक त्रिभरुकि। तत्कस्यहताः सविषः सजाल्ये अथपत्रिभमप्रतीतं सविषलाजनम
 वत। किं चापित वृत्तं तथग अतथ तसतथ स्य गतिश्च अहिल तवनी यं हवत्पुपि उरवत्पूनः सविषत्वा त्रिवर्जनी यं हवति॥ पत्रि ता नां नपत्रिहा गमय
 तदेव वालजाति या दुष्पुष्पा नीयः पुष्पः पत्रिही कयं मयता तस्य तहाज तं पत्रिह म नम वरुतं थग अतथ तसतथ स्य गतिश्च स्वाद सूतव कंत्रपः
 त्रिभमचास्यइः तवविपाक मृवति सतता निदानं सततम्या निगच्छेत्तमनं माउकम्याइः तव नवमवार्थ सूतत उहे कइरु हातेन इद्रय लकि तनद्रः स्वाध्या
 तन सूताधितस्यार्थमज्ञा ना मथतुतमय म नववृक्ष माना नु वमवदि थका व मने अ सिधकि। अहितं के लपु जनी ना नागत पुत्पुत्पत्रा ना वृक्षनां

[illegible][illegible]

[illegible]

五

٣٤

[illegible]

५५

च
दि

ननु त्वच न॥ उवम की आ मषा सा विपुला रगव क मतद वा च॥ उवम हि निर्क ता रगव मुहा पात्र मिता। क तम सर्म मय यति॥ रगवानाह॥ उवम हि निर्क ता
 सा निपुण पुहा पात्र मिता न कश्चि र्म मय यति। यदा सा निपुण न कश्चि र्म मय यति। तदा पुहा पात्र मिता सं त्याग कृति॥ अथ खलु कृता दवाना मिता
 गव क मतद वा च॥ किमि मरु गव न पुहा पात्र मिता सर्व ह ता मपि म
 पि नाम यति। न यथा पल म् सु अर्थ यो न न यथा नाम त अर्थ यति। न यथा नामा रि सं स्का न सु अर्थ यति। अ क अर्हा॥ कथं कर्हि रगव न र्थ यति॥ रगवाना
 ह॥ यथा की नि न र्थ यति। त अर्थ यति। अ क अर्हा॥ अथ यी र्ग व न्या बदि मं पुहा पात्र मिता न। क वि धर्म म् पा द यति। न कश्चि र्म मय यति। सर्व ध र्म म्
 प्र न्या द मा नि नो ध य पु त्प प स्मि ता। अ प स्मि ता पु हा पात्र मि ता। अथ खलु य म् पा न्म त्ति र्ग व क मतद वा च॥ स च द व म पि र ग व वा धि स त्वा मि हा स
 त्वः स क्ता स्य न ह त्रि क रि ष्य ती मां पु हा पात्र मि तां तु क्ति क रि ष्य ती मां पु हा पात्र मि ता न क रि ष्य ती मां पु हा पात्र मि ता। उ व म् क र ग व न्या म् न स र त
 मतद वा च॥ उ व म त्म र त्ते उ व म त्म त्ता। अ स्मि न्म स र त्ते प र्था या य न प र्था म न इ ती क रि ष्य ती मां पु हा पात्र मि तां त्रि क रि ष्य ती मां पु हा पात्र मि ता
 तु क्ति क रि ष्य ती मां पु हा पात्र मि ता न क रि ष्य ती मां पु हा पात्र मि तां॥ तत्क स्य ह ताः पु हा पात्र मि ता मां हि स र त्ते प रि दी पी ता या न्न र प प रि दी पि त म् क
 ति॥ न व द ता न सं स्का न सं स्का ना त्रि वि ह्वा न्म त्रि दी पि त म् क वा त। न अ म त्म अ प रि ह लं प रि दी पि तं र व ति। न स क्ता द ग म् मि रु नं प रि दी पि तं र व ति। न ना

॥ ७ २ ॥

अमिह नं प रि दी पी त म् क व ति। न ह त्वं प रि दी पि त म् क व ति। न प्र ण क व र्त्त त्वं प रि दी पि त म् क व ति। न वृ क्त्वं प रि दी पि तं र व ते॥ स्म वि न्म स र त्ति ना ह॥ म हा पा त्र मि त म्
 र ग व न्या इ त पु हा पात्र मि ता र ग व न्या ह॥ तत्कि म् न्य म् स र त्ते क त म् न प र्था म न म हा पात्र मि त म् य इ त पु हा पात्र मि ता। स्म वि न्म स र त्ति ना ह॥ न र ग व न्या म् म ह त्क
 ना ति ना ल्पी क ना ति। न नृ प सं क्रि य ति वि क्रि य ति। उ व न्न व द ना त्र सं स्का न्म सं स्का ना त्र र ग व न्या ह्वा नं म ह त्क ना ति ना ल्पी क ना ति। न वि ह्वा नं सं क्रि य ति न वि क्रि य ति। म न
 न्य पि ता नि त अ ग त स्य त अ ग त वा ना नि ता न्य पि ता नि न व त्रि क अ ति न इ र्व क ली क ली ति। न सं प ति न वि क्रि य ति। या पि सा सर्व ह ता ना म पि न म ह ति व श्रा नि ना
 ल्पी क ना ति ना सं क्रि य ति वि क्रि य ति। तत्क स्य ह ता न सं क्रि य ति वि क्रि य ति। अ हि र ग व न्या सर्व ह ता स च द व म पि र ग व वा धि स त्वा मि हा स त्वः सं ज्ञा नि त। न च न ति पु हा पा
 त्र मि ता मां। कि म् न न व सं ज्ञा नि त। उ व म ह स र त्ते ह्वा न स म चा ग तः स र्व पि ध र्म म् क षा पि ष्या म् व मि मां स त्वा न्य त्रि नि र्वा प ष्या मि ति॥ तत्क स्य ह ता न क ष पु हा पात्र
 मि ता व दि त व्या। स त्वा इ स्त वा व त या पु हा पात्र मि ता इ स्त वा व त्वा व दी त व्या। स त्वा वि वि क त या पु हा पात्र मि ता वि वि क ता व दि त व्या। स त्वा चि न्म त या पु हा पात्र मि
 ता इ चि न्म ता व दि त व्या। स त्वा वि ना स ध र्म त या पु हा पात्र मि ता इ वि ना स ध र्म ता व दि त व्या। स त्वा न रि सं वा ध न त या पु हा पात्र मि ता इ न रि सं वा ध न ता व दि त
 व्या। अ न न य र ग व न्या यी य न म हा पात्र मि त म् य इ त पु हा पात्र मि ता। अथ खलु य म् पा न्म त्ति र्ग व क मतद वा च॥ म हा र ग व त्रि ह ग म्ही ना मां पु हा पात्र मि
 ता मां वा धि स त्वा मि हा स त्वा इ पि म्म अ पि ष्य ति। न कां क्रि य ति न वि वि क ति ष्य ति। न ध वा पि ष्य ति। कृतः पुनः स र ग व न्या र त्ता प प त्ता व दि त वा त्कि य त्रि

७

३५

1196

मुधनिर्मूकानसाणदापनिभमधिउं।ननीमिलीकर्तुंनानवनिकर्तुंनापिसाहकप्रतमप्रविस्मगा।सूतनिनाह।गमि।नरगवयुकनिधर्मी।आरगवानाह
 विविमेकत्वात्सूतन।आह॥पु।कनिर्गमि।नरगवयुस्त्रापानमिता।रगवानाह॥पु।कनिविष्णुधत्वात्सूतनपु।कतिविवेकत्वायुकनिगमीनत्वायुस्त्रा
 पानमितामसूतनीनाह॥पु।कनिविवेका।रगवयुस्त्रापानमिता।नमस्क।प्रामि।रगवयुस्त्रापानमितये॥रगवानाह॥सर्वधर्मीअपिसूतनपु।कनिविवेका।याच
 सूतनसर्वधर्मीभाम्या।कनिविवेकासायुस्त्रापानमिता।नत्कस्यहतासुअहिसूतनअकताःसर्वधर्मीसुअगननीहतासम्यकंवृद्धनाहिसंबुधः।सूतनिना
 ह॥नस्मातहिरगवंसर्वधर्मीअनहिसंबुधसुअगननार्हतासम्यकंवृद्धन।रगवानाह॥नअहिसूतनपु।कयेवनधर्मीःकि।कीयाचपु।कतिःसा।पु।कनिमी
 वापु।कतिःसापु।कतिःसर्वधर्मीनामकलकनत्वाद्यइतालकनत्वात्।नस्मातर्हि।सूतनसर्वधर्मीअनहिसंबुधसुअगननार्हतासम्यकंवृद्धनत्कस्यहतानहि
 सूतनइधर्मीपु।कता।नुकेवहिसूतनसर्वधर्मीत्तंपु।कियाचसूतनसर्वधर्मीत्तंपु।कतिःसाअपु।कतिःसापु।कतिःनुवमेताःसूतनसर्वाःसर्गेकोधोविवर्ति
 ताहवन्ति।सूतनिनाह॥गमी।नरगवयुस्त्रापानमिता।रगवानाह॥आकाशगमिनतमासूतनगमि।नप्र।स्त्रापानमिता॥सूतनिनाह॥इन्नेवैवाअरगवयुस्त्रानः
 मिता।रगवानाह॥नअहिसूतनकष्टिपरिसम्बधता।आह।अचिरपा।रगवयुस्त्रापानमिता॥रगवानाह॥नअहिसूतनपु।स्त्रापानमितानविरुनस्त्रागव्यानविरु
 तमनिमा।आह॥अकता।रगवयुस्त्रापानमिता।रगवानाह॥कानकानूपलप्रीतःसूतनइकतायुस्त्रापानमिता।आह॥ननहिरगवन्वाधिसत्वनमहासत्वनपु।स्त्रापान

॥ प्रह्लादः ॥ सर्वमहाव्रतः सहायतिष्ठ महाव्रतात् सर्वधनरत्नार्वाक्यनापसकां गुडय संकुम्य रगतः पादोष्णिगसाहिवन्दा रवन्नुक्ति पुदकिता कल्पवृक्षा कस्मि
 नावैत महाव्रतानः सर्ववृत्ता दवन्दाः सर्ववृत्त कायिका दवा महाक्रा तव सहायतिष्ठ महाव्रता वृद्धा दता वन वृद्धि कननः वृद्ध सहस्र समन्वाहः
 नतिस्मा जुरिनेवनामरिने हिनवपद नरिनेवाक्येः सूरतिनाम त्वमेव रिरिहति नयमवपु ह्यापानमितां पदिकाः अयमवपु ह्यापानमिता वनिव
 र्हे सुतापिणका नुवदवन्दाः पत्रिपुक्किस्मा पत्रिपु सुमतिस्मा अस्मिन्नेव दधा विपुदला कृष्णमवपु ह्यापानमिता लाषिता मेठुयाः शिवोधि सत्वा
 महासत्वाः नृत्ना सम्यक् वाधिसरिसव म्मास्मिन्नेव पथिवी पुदला नुनामवपु ह्यापानमिता लाषिता नृत्ति ॥ आर्याक सहस्रिका मोपु ह्यापानमिता ॥ ८ ॥
 तामो विष्णु धियत्रिवर्त्तनामा कमः ॥ ६ ॥ अरवेथेत्वा मध्या नूरुति र्हेगवन्क मरुदवाचन पुह्यापानमिता र्हेगवन्ना मधममात्र मरुतः
 तद्वनामदमिति नापयैरुत्तः वाग्ब ह्यवनाम पु यूनः सापिपु ह्यापानमिता नविद्यत नापनलगा मयेवनाम र्हेवपु ह्यापानमिता यथा पुह्यापानमिता
 आनामधर्मद्वय मरुत नविद्यते नापनलगा पिंका नृत्तं र्हेगवन्मेठु यावाधिसत्वा महासत्वाः नृत्त नोसं म्यक् वाधिसरिसव म्मास्मिन्नेवनामरिने हीनव
 पद नरिनेवाक्ये नस्मिन्नेव पथिवी पुदला कृष्णमपु ह्यापानमिता लाषिता नुवमर्क र्हेगवनाम म्मा नूरुति र्हेगवन्क मरुदवाचन ॥ यथा हि सूरुत मेठु यावाधिसत्वा
 महासत्वा नयत्रिसनेन पम्बद्वय म्मा क मय क विष्णु ह्यमिरि सहास्यता नुवन्नेव दना न संस्का न संस्का न विहान निनेन विहान न वध न म्मा क

नयक विष्णु धमिरि सहास्यता अवनसूरुत र्हेका न न तामेठु यावाधिसत्वा महासत्वाः नूरु नो म्यक् वाधिसरिसव म्मा नूरुति र्हेगवन्क मरुदवाचन पुह्यापानमिता लाषिता नुवमर्क
 पदवाञ्जनेन स्मिन्नेव पथिवी पुदला कृष्णमपु ह्यापानमिता लाषिता नुवमर्क आर्याक नूरुति र्हेगवन्क मरुदवाचन ॥ यथा हि सूरुत मेठु यावाधिसत्वा
 ह्यापानमिता र्हेगवनाम ॥ रूपविष्णु हितः सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता नुवन्नेव दना संस्का संस्का नाविहान नविष्णु हितः सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता
 ह्यापानमिता रूपान्स्या दानिना संस्का संस्का वदना विष्णु हितः सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता नुवन्नेव दना संस्का संस्का नाविहान न्यादानिना
 अस्मिन्नेव वदना विष्णु हितः सूरुत पुह्यापानमिता आका णविष्णु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता रूपानि नृपलपा पत्रिपु ह्यापानमिता
 सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता नुवन्नेव दना संस्का संस्का नाविहान निरूपयत पापत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता ॥ आका णविष्णु ह्यापानमिता
 निरूपयत पापत्रिपु ह्यापानमिता निरूपयत पापत्रिपु ह्यापानमिता पुरवा पुरवा संस्का पत्रिपु ह्यापानमिता ॥ आका णविष्णु ह्यापानमिता
 ह्यापानमिता निना अनिना संस्का संस्का वदना विष्णु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता ॥ आका णविष्णु ह्यापानमिता
 सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता नुवन्नेव दना संस्का संस्का नाविहान निरूपयत पापत्रिपु ह्यापानमिता
 सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता
 सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता सूरुत पत्रिपु ह्यापानमिता

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

[illegible]

मस्यां २

स्यं ता न ता निजी ता हि को णि क वृ द्धा ना तु ग व तां सर्व रु ता सर्व रु द्धा नि जी ता च पु नः पु रु षा पा न मि ता पु हा च ते । उ वं म स्यो ग मि ता यो पु रु षा पा न मि ता यो च त्रि त योः
उ वं म स्यो पु रु षा पा न मि ता यो स्रु त यो म त्वं पु रु षा पा न मि ता यो यो ग मा रु व ॥ अ थ त्व लू ण को द वा ना मि ता र ग व न म त द वा च न ॥ क थं अ ग व यु रु षा पा न मि ता यो
च न न्दी धि स स्त्री म हा स त्वा ४ पु रु षा पा न मि ता यो मि ता र ग व ति । क थं पु रु षा पा न मि ता यो अ न यो ग मा प य न । उ व म के र ग वा न्म क र्थे वा ना मि न्द्रु म त द वा च न । साः
धृ सा धू को णि क सा धू र व न पु न स्त्र को णि क । म स्त्र न्द्रु अ ग त स र्त्त नं स म्प क वृ द्ध म त म थं प त्रि पु ष्ठ यं । प त्रि मी क र्त्त यं म न्य स । क र्त्त यी को णि क वृ द्धा नू हा वा नः
पु त्रि रा न म् स त्नां अ हं को णि क वा धि स स्त्री म हा स त्वा पु रु षा पा न मि ता यो अ न न्द्रु प न ति कृ ति नू प मि ति न ति कृ ति । य तः को णि क वा धि स स्त्री नू प न ति कृ ति
नू प मि ति न ति कृ ति । उ व नू प अ ग मा प य न । उ व व द ना यो स र्त्त सं स्का न प्र वि द्धा न न ति कृ ति वि द्धा न मि ति न ति कृ ति । य तः को णि क वा धि स स्त्री म हा स त्वा वि
द्वान न ति कृ ति वि द्धा न मि ति न ति कृ ति । उ व वि द्धा न यो ग मा प य न ॥ नू प मि ति को णि क न यो ज य ति । य तः को णि क नू प मि ति न यो ज य ति । उ व नू प मि ति न ति
कृ ति । उ व व द ना स र्त्त सं स्का न वि द्धा न मि ति को णि क न यो ज य ति । य तः को णि क वि द्धा न मि ति न यो ज य ति । उ व वि द्धा न मि ति न ति कृ ति । उ व पु रु षा पा न मि
ता यो मि ता र ग व न्द्रु यो ग मा प य न ॥ अ थ त्व लू ण मृ श्मा न्सा नि पू त्रा र ग व न्द्रु म त द वा च न ॥ ग मि ता र ग व यु रु षा पा न मि ता । इ न बं ग हा र ग व यु रु षा
पा न मि ता । इ न द्रु हा र ग व यु रु षा पा न मि ता । अ पु मा त्ता र ग व नू पु रु षा पा न मि ता ॥ र ग वा ना ह ॥ उ व म त क्ता पि पू उ व म त न् ॥ नू पं ग मि न मि ती ण म पि पू य न

[illegible][illegible]

प्रह्लादः सस्य के वृद्धे न समत्वे वा कृता इथ च पुनरप्यासनास्मिन्ननूरा प्राप्ताः सम्यक् वाधे व्याकृतं सत्यं तत्क साहो सुखं नान्तरा मीनां प्रह्लादाय मितां लहेतवर्णना
पवन्दनापपम्यपासनापथवत्प्रमितिः तद्यथापि नामरुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥ पल्लवेषु प्राइरवन्ति
षाहमनस्कारवन्ति ॥ इवृद्धिपकामनस्यास्मानिपूर्वनिमित्तो निवन्वृद्धिः नचिनाइने प्रप्राप्तिवन्ति नानिच प्राइरवन्ति ॥ तत्क साहो सुखं नान्तरा मीनां प्रह्लादाय मितां लहेतवर्णना
निमित्तानि सुखेषु इथ कथात्पि ॥ पुनरप्येव रुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥ पल्लवेषु प्राइरवन्ति
उपवर्तन्ते ॥ तस्य मंगलं मितां प्रह्लादाय मितां लहेतवर्णनापवन्दनापपम्यपासनापथवत्प्रमितिः तद्यथापि नामरुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥
मिनां प्रह्लादाय मितां लहेतवर्णनापवन्दनापपम्यपासनापथवत्प्रमितिः तद्यथापि नामरुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥ पल्लवेषु प्राइरवन्ति
निमित्तानि सुखेषु इथ कथात्पि ॥ पुनरप्येव रुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥ पल्लवेषु प्राइरवन्ति
उपवर्तन्ते ॥ तस्य मंगलं मितां प्रह्लादाय मितां लहेतवर्णनापवन्दनापपम्यपासनापथवत्प्रमितिः तद्यथापि नामरुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥
मिनां प्रह्लादाय मितां लहेतवर्णनापवन्दनापपम्यपासनापथवत्प्रमितिः तद्यथापि नामरुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥ पल्लवेषु प्राइरवन्ति
निमित्तानि सुखेषु इथ कथात्पि ॥ पुनरप्येव रुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥ पल्लवेषु प्राइरवन्ति
उपवर्तन्ते ॥ तस्य मंगलं मितां प्रह्लादाय मितां लहेतवर्णनापवन्दनापपम्यपासनापथवत्प्रमितिः तद्यथापि नामरुगवन्वसन्नप्रत्युपस्थितं कथात्पि पलासपुना नावदेषुना नापलवाः प्राइरवन्ति ॥

[illegible]

ਓਹ ॥

[illegible]

॥ २५ ॥

वा नगनस्म

[illegible]

प्रश्नः ॥ हा पात्रमिनां कृत्वा प्रविशाम न सुताः काः भव कृष्ण क दूधा तृमि सति वदन्ति । तद्यथा चित्तं वा नमः स्यात् न वृद्धमपि सुतं तं मान कर्म विदितं वा सुतं तं
तथा नृपा नं वाचि सत्त्वानि का नापुत्रानां तद्यथा चित्तं नाम सुतं तं पनगं ॥ १ ॥ वाप ल ग ह्ना नं वासी व विजय तस्य प्रासादस्य प्रमा तनया सादक
र्तु कामानि मूर्ध्नि कामः स्यात् ॥ स ह्यपि च नु म सो विमान प्रमा तं म त्तु नं प मी ध त प र्थ प मान स्यु र्मा च नु म स्य र्वा मा तं प र्थ ॥ स त नः पुमा तं गृही
तव रे व र्णै र्मु र्ते त्रि नो हे म न्ये त । तन्कि म्म न्य स सुतं तं व जय कृ प्रा साद स्य प्र मा तं प्रा साद क र्तु कामानि मूर्ध्नि काम न स्यु र्मा च नु म स्य र्वा मा तं प्र मा
तं गृहीतव र्ते वन्ति । सुतं त्रि नाह ॥ नाही दे र ग व न र ग व नाह ॥ २ ॥ न व म व सुतं तं रु वि ष्य न्य ना ग र्थ म्ये कं वाचि सत्त्वानि काः पुं ग र्थे पुं हा पात्र मिनां
॥ ३ ॥ हा पात्र मिनां लघु पुं हा पात्र मिनां त्रि किं वा पुं हा पात्र मिनां मृत्स म्भ व कृष्ण क दूध तृमि सति संप्र कः सुता नः सर्व ह न प र्थ चित्तं वा
मं न्य न्का यि त स्यु र्मा काः ॥ ४ ॥ न व म र्ते व दन्ति । न क मा त्मा नं द म पि ष्य मः ॥ ५ ॥ न क मा त्मा नं स म पि ष्य मः ॥ ६ ॥ न क मा त्मा नं प नि नि व पि मि ष्य म र्ते व ॥ के व न
मा त्म द म ग म थ प त्रि नि र्वा म वा प न म कि । तथ नृपा न्मुता ना न्य र्थे पि ष्य न्का । तथ च चित्तं वा नमः स्यात् न । तन्कि म्म न्य स सुतं तं र पि न्य ॥ ७ ॥
न जाति मा चो चि सत्त्वाम ह सत्त्वा व दित वाः सुतं त्रि नाह ॥ नाही दे र ग व न र ग व नाह ॥ ८ ॥ वृद्ध मपि सुतं तं तं मान कर्म विदितं वाः तद्यथा चित्तं नाम
सुतं तं क षि द व षु र्धा ना ज्ञानं च कु व र्ति न ड ष्का मा र व ॥ स ना ज्ञानं च कु व र्ति न प ष्य न्का ॥ ९ ॥ च द ष्य ना ज्ञा च कु व र्ति न र्ते न ज्ञा सा ज्ञा च वि

निमित्तं गृह्णित्वा काष्ठं राजं पश्यन् स तस्य काष्ठं राजस्य वृद्धं संस्मानं कृत्वा त्रिदिक्षु निमित्तं वा गृह्णित्वा अथ निवृत्तं विष्णुं प्रहृष्टं नृपत्यं वंदन् दीप्तं
उव राजचक्रवर्ति चर्ह न संस्मानं न तं राजसां ध्यायै च निमित्तं न च तं ॥ तस्मिन् न्यस्य सूर्यं अथ निरूपयन् तज्जातिमः पृथुया वदितव्यं
अथ चक्रवर्ति राजानं काष्ठं राजानं काष्ठं राजं न समिकरुं यम्य न ॥ सूत्रं त्रिजगत् नाहिद रणव न रण वा नाहा उव भव सूर्यं तं विषयं न्य नागं ध्याय
कं वाधिसत्त्वमानिकाः पूज्या गणं मां प्रहृष्टा पात्रमितां लघ्वा प्रहृष्टा पात्रमितां त्रिचिन्ता प्रहृष्टा पात्रमितां च्छात्रमितां सुप्रभवक पुत्रवृद्ध रमि पुत्रि संयुक्तं
सूत्रं के सर्वरूपां पृथुया वदितव्यं ॥ न खलु पुन न ह सूर्यं उरि न वृथैः भवक पुत्रक वृद्ध रमि
पुत्रि संयुक्तं सूत्रं के वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य सर्वरूपां पृथुया वदितव्यं ॥ अथ निरूपयन् सूर्यं तं विषयं न्य नागं ध्याय
नाम ह सत्त्वा नां उपाय कोणं स्यात्मा तं ॥ तत्र निमित्तं वाधिसत्त्वो मसमात्वा न निमित्तं स्य सूर्यं तं विषयं न्य नागं ध्याय
अथ वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य सर्वरूपां पृथुया वदितव्यं ॥ न खलु पुन न ह सूर्यं उरि न वृथैः भवक पुत्रक वृद्ध रमि
पुत्रि संयुक्तं सूत्रं के वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य सर्वरूपां पृथुया वदितव्यं ॥ अथ निरूपयन् सूर्यं तं विषयं न्य नागं ध्याय
नाम ह सत्त्वा नां उपाय कोणं स्यात्मा तं ॥ तत्र निमित्तं वाधिसत्त्वो मसमात्वा न निमित्तं स्य सूर्यं तं विषयं न्य नागं ध्याय
अथ वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य सर्वरूपां पृथुया वदितव्यं ॥ न खलु पुन न ह सूर्यं उरि न वृथैः भवक पुत्रक वृद्ध रमि
पुत्रि संयुक्तं सूत्रं के वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य सर्वरूपां पृथुया वदितव्यं ॥ अथ निरूपयन् सूर्यं तं विषयं न्य नागं ध्याय

॥ ७५ ॥ बं विवर्धयन् न वं विवर्धयि विवर्धयि न मा नं पथि पित वाम् न्य नः सूरति नाह ॥ नाहि दम् गव न् रु गवा नाह ॥ तद्यथापि नाम सूर वृद्धि तः पुनः षः षात
न संराजनं प्राहिविपाकं मुखविपाकं पावदायः पथि कं रुत्पिपासा निवर्त्तकं गदयाथ षष्ठिका द नं लघ्वा षात न संराजन मूत्सु विवर्धयं षष्ठि
कार नं पत्रिही कं यं मयं तात त्किम् ॥ ॥ ये सूरत न अपि नू स पुनः पः ॥ तज्जा नी मा ल वत् ॥ सूरति नाह नाहि दम् गव न् रु गवा नाह ॥ एवमवसूर
त रविष्य न्य नाग न्य ध न्य क वाधिस त्वा यं मां पु रु पात्र मितां लघ्वा षा पात्र मितां त्रिष्य नि पु रु पात्र मितां मू अक नी पु रु पात्र मितां च्छा नयिष्य
नि पु रु पात्र मितां हू नी क त्रिष्य नि ॥ पु रु पात्र मितां त्रिष्य नि पु रु पात्र मितां मू अक पु रु पात्र मितां च्छा नयिष्य पु रु पात्र मितां हू नी क त्वा तः ष्म व क उ
षक वृद्ध या न पु तिसं कं सृजा कां पथि पित वाम् न्य नः ॥ ये सूरत नाः ष्म व क पु रु क वृद्ध र मिम विवद कि। तेः सर्व हं तां च्छा नयिष्य पथि पित वाम् न्य नः ॥
तत्कि म न्य सूरत न अपि नू स पुनः पः ॥ तज्जा नी मा ल वत् वाधिस त्वा वदित वाः सूरति नाह ॥ नाहि दम् गव न् रु गवा नाह ॥ ष्म दमपि सूरत न तं मा न क म्मि वदित वं ॥ तद्यथा
पि नाम सूरत न क थि द व पु न् षा इ न प्या म स्ति त तं लघ्वा अ ल्या र्थ ष्य स्या त्र न म त्रि त्वे न सार्धं समि क र्त्तु वं म न्य ता त्कि म्म न्य सूरत न अपि नू स पुनः पः ॥ तज्जा
नियः पुनः षा वदित वाः सूरति नाह ॥ नाहि दम् गव न् रु गवा नाह ॥ एवमवसूरत रविष्य न्य नाग न्य ध न्य क वाधिस त्वा यानि काः पु रु ता यं ष्म दग म्ही नं पु रु ता यं पु रु
पात्र मितां त लघ्वा ष् पात्र मितां ष्म व क पु रु क वृद्ध र मिम विवद कि। तेः सर्व हं तां च्छा नयिष्य पथि पित वाम् न्य नः ॥ तत्कि म्म न्य सूरत न अपि नू स पुनः पः ॥

सूक्तं पञ्च नृणां यथा कृषिं वाधिसत्त्वा वेदिन वाः सूक्तं निराह ॥ नाहिदं रगवन्मृगवा नाह ॥ धूमं पयि सूक्तं नृणां वाधिसत्त्वा नो महासत्त्वा नो मात्रकर्म वेदिन वां म ॥ पुनत्र
पत्रं सूक्तं नृणां गमिनां प्रह्लापा नमिनां राख्यमानायां दण्डमानायां मृपदिग्धमानायां मृदुमानायां वाच्यमानायां श्रम्यमानायां मृदिस्पमानायां स्वेध्याप्य
मानायां मृज्जन्मानायां मृपिवक्त्रनिष्ठानिना न्युत्पत्त्य के ॥ यानि चिरुविज्जपेकत्रिष्यकिदमपि सूक्तं वाधिसत्त्वा नो महासत्त्वा नो मात्रकर्म वेदिन वां म ॥
उवमृकं श्रम्यमानायां मृपिवक्त्रनिष्ठानिना न्युत्पत्त्य के ॥ यानि चिरुविज्जपेकत्रिष्यकिदमपि सूक्तं वाधिसत्त्वा नो महासत्त्वा नो मात्रकर्म वेदिन वां म ॥
सूक्तं पञ्च नृणां यथा कृषिं वाधिसत्त्वा वेदिन वाः सूक्तं निराह ॥ नाहिदं रगवन्मृगवा नाह ॥ धूमं पयि सूक्तं नृणां वाधिसत्त्वा नो महासत्त्वा नो मात्रकर्म वेदिन वां म ॥ पुनत्र
पत्रं सूक्तं नृणां गमिनां प्रह्लापा नमिनां राख्यमानायां दण्डमानायां मृपदिग्धमानायां मृदुमानायां वाच्यमानायां श्रम्यमानायां मृदिस्पमानायां स्वेध्याप्य
मानायां मृज्जन्मानायां मृपिवक्त्रनिष्ठानिना न्युत्पत्त्य के ॥ यानि चिरुविज्जपेकत्रिष्यकिदमपि सूक्तं वाधिसत्त्वा नो महासत्त्वा नो मात्रकर्म वेदिन वां म ॥
उवमृकं श्रम्यमानायां मृपिवक्त्रनिष्ठानिना न्युत्पत्त्य के ॥ यानि चिरुविज्जपेकत्रिष्यकिदमपि सूक्तं वाधिसत्त्वा नो महासत्त्वा नो मात्रकर्म वेदिन वां म ॥

[illegible]

॥ ५६ ॥

[illegible]

॥ ७५ ॥ धृतिरक्षानवाविपश्चित्क्षानरिहोवाविपश्चित्क्षानमपिसूतननप्रमेविसामग्रीरविपश्चित्प्रक्षानमितायांरीष्यमानायांदध्यमानायांमपदिष्यमानायांमदी-
ध्यमानायांस्वाध्यमानायांविज्ञमानायांमकसांतिरवमानायांमिदमपिसूतनवाधिसूतनमहासूतनविषामग्रीमानकर्मवेदितव्यम्॥पुनरपनसूतनधर्मज्ञानव-
ध्यकिनासिरविपश्चित्क्षानउकायावाचमिदुकायाः॥००मांप्रक्षानमितांअर्म्मभवतिकश्च००मकरंयस्मिन्तारविपश्चित्नाद्यनित्क्षानवाविपश्चित्क्षानरिहो-
वाविपश्चित्॥००मपिसूतनवाधिसूतनमहासूतनविषामग्रीमानकर्मवेदितव्यम्॥पुनरपनसूतनधर्मज्ञानकश्चमिषउत्कालासत्कात्रवीवत्रउत्कारविपश्चित्म-
र्मभवतिकश्च००समुक्तप्रविधिकार्यम्वा नउकायाविपश्चित्मपिसूतनप्रविषामग्रीरविपश्चित्प्रक्षानमितायांविज्ञमानायांस्वाध्यमानायांमिदमपिसूत-
नवाधिसूतनमहासूतनमानकर्मवेदितव्यम्॥पुनरपनसूतनधर्मभवतिकश्च००मक्षारविपश्चित्प्रक्षानमितायांउकाया३थमववाधुकायाउकाया३थमिषकुका-
याधर्मज्ञानकचाप्रक्षारविपश्चित्॥००क्षानवावावाउकाया३थमपिसूतनविषामग्रीमानकर्मवेदितव्यम्॥पुनरपनसूतनधर्मभवतिकश्च००मक्षारविपश्चित्॥००म-
काया३थमववाधुकायाधर्मज्ञानकम्यचातातिस्त्रातिधर्माकृताधिकृतमानसंरविपश्चित्॥००मपिसूतनधर्मभवतिकस्याप्यधर्मज्ञानिनःप्रतिवातीरवि-
पश्चित्॥००मपिसूतनप्रविषामग्रीरविपश्चित्प्रक्षानमितायां००त्वतामृतताश्चनयतांवाचयतांपर्मवाप्रवतामकत्वमतिरिक्तामिदमपिसूतनवाधिसूतनमहास-
सूतनमानकर्मवेदितव्यम्॥पुनरपनसूतनधर्मज्ञानकश्चलापिउकायाविपश्चित्॥धर्मभवतिकश्च००क्षुद्धिकारविपश्चित्॥००वक्षाम॥००मपिसूतनन

५५

[illegible]

[illegible][illegible]

प्रस्ता +

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

499311

लासमति को कत्वाचि स्नायुत्वा हृति सुतने विज्ञानगतमेकधर्मस्याधिवचनप्रवमप्रमया असंख्यया असमसमा हृति। अप्रमया असंख्यया असमसमा हृति
सूतने समसंख्यापनमात्मपनमत्वाप्रमया असंख्यया असमसमास्तथागतधर्माः आकाससंख्याप्रमया असमसमा असंख्यया अप्रमया। उत धर्मा आ
कासो स्यात्तथा इत्यादि। उत धर्मा समवहितावतमधर्मास्तस्मात्सूतने अहल्या उत धर्मा उच्यन्ते। आकाशविस्तृतया अविस्तृतधर्माः आकाशमहत्त्वतया अहल्या
उत धर्मा आकाशप्रमया अप्रमया उत धर्मा आकाससंख्यतया असंख्यया उत धर्मा आकाससमसमतया असमसमायतधर्माः अस्यात्स्वप्ननचिन्त्यतया
महत्त्वतया प्रमया प्रमया मसंख्यतया मसमसतायां राख्यमात्म्यापंचानादिकृणानामनुपादया अवस्थितानि विभक्तानि। विगतस्थितिकृणानामनु
पादया अवस्थितानि विभक्तानि षष्ठ्यसकसकानाविनकादिगतमसधर्मधर्मचक्रविसृष्टिनिर्गन्धयामिकासकानाविनकादिगतमसधर्मधर्मचक्र
चक्रविशुद्ध्याविशालाचवाधिसंवेत्तुलिकेषु धर्मेषु नातिप्रतिनष्टाहत्त। तत्तत्तावता वृद्धवत्प्रवत्येका कता अनृतायां सप्रकाशोऽपि न उपासका उपाः
भिक्षाश्च येषां विनशा विगतमसधर्मधर्मचक्रविशुद्धतेपितगवतया। कता कषामप्यनुपादया अवस्थितानि विभक्तानि। अथ तत्त्वाध्यासूतने र्हावतमसधर्म
चक्रागमिना र्हावतमसधर्मचक्रागमिना महाकतेन वर्तमानं दयस्वपानमितापुष्टिगता उवमके र्हावतानाधर्मके सूतने मन्तवाचत। उवमतसूतने उव
मन्तवाचत॥ गमिना सूतने उवपा नमिता महाकतेन सूतने उवपा नमिता उवपा नमिता॥ तत्कसाहता ननु हि सूतने सर्वज्ञातसमायकाः। अथ तत्कवत्तमि

११७

आ

प्रश्नः स च उरुपा नमिता ना धमलम् क वदिनयमन सूरः क नवेष वधनि यम साद मा प लम् । अत्रा का नवस र्भरु ना वृत्तवः स व लके वृत्त व व सा म सी म
 मत्वा रव लुप न सूरुत वाधिसत्वा नामा सत्वा ना प मि श्रु द्वा र सि द्वा नि न सि न वि न सि कृ द्वा । सि वि र्थ म स्य प्र मा दा र म्प धि म की न स र्ध म मी र सि सा ला र
 सि ल म न व म सि प्री ति न सि प्र मा य म सि म सा दा सि प्र मा स्य नि वि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा धि म रि सें वा धः न व स र्ध पा न मि ना म ध न व न । न व न वा सो श्र द्वा सा
 क कि सा न वि स क र स धी र्थी धा प्र हा द सो धि म कि सा ध म यः स र्ध ग सि को न वः सा धी ति मे सा मा य स र्ध सा द स र्ध मः सा न नि कि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा
 धि म रि सें वा धः न व स र्ध पा न मि ना म ध न व न । न व न वा सो श्र द्वा सा क कि सा न वि स क र स धी र्थी धा प्र हा द सो धि म कि सा ध म यः स र्ध ग सि को न वः सा धी ति मे सा मा य स र्ध सा द स र्ध मः सा न नि कि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा
 व स र्ध ग सि को न वः सा धी ति मे सा मा य स र्ध सा द स र्ध मः सा न नि कि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा धि म रि सें वा धः न व स र्ध पा न मि ना म ध न व न । न व न वा सो श्र द्वा सा
 सि प्र द्वा सि क कि न सि र चि न सि कृ द्वा सि वि र्थ म स्य प्र मा दा र म्प धि म की न स र्ध म मी र सि सा ला र सि ल म न व म सि प्री ति न सि प्र मा य म सि प्र मा स्य नि
 नि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा धि म रि सें वा धः न व स र्ध पा न मि ना म ध न व न । न व न वा सो श्र द्वा सा क कि सा न वि स क र स धी र्थी धा प्र हा द सो धि म कि सा ध म यः स र्ध ग सि को न वः सा धी ति मे सा मा य स र्ध सा द स र्ध मः सा न नि कि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा
 प लम् न कृ ति क स र्ध र न वा धि स र्ध सा न ना व ध नि य व सा द म्प व क र मि र्थ प र्थ क र ध र मि र्थी न य धा पि ना म सूरुत म्प वा प्र द्वा वा स प नि य क र्ध न न ना ना व स न स र्ध वा न र
 न ना वा उ द पा ना दान ना य स र्ध वा उ द का ध न स र्ध उ द क प नि व र्ध न स र्ध र्ध क प नी व र्ध ना व दि न य म न सूरुत स र्ध सि ना न र न ना मा ना य र्ध र्ध ग मि थ ति ति । न क स र्ध र्ध म य

११६

अपि ना म स र्ध नि य क र्ध म्प व म्प व सूरुत म्प वा धि स र्ध म्प म हा स र्ध सा सि प्र द्वा र सि द्वा नि न सि न वि न सि कृ द्वा । सि वि र्थ म स्य प्र मा दा र म्प धि म की न स र्ध म
 ध म मी र सि सा ला र सि ल म न व म सि प्री ति न सि प्र मा य म सि प्र मा स्य नि वि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा धि म रि सें वा धः न व स र्ध पा न मि ना म ध न व न । न व न वा सो श्र द्वा सा
 प्रा य को र्ध ल्प न द न मि र्ध ना र व ति । व दि न य म न सूरुत ना य र्ध धि स र्ध म हा स र्ध सा र्ध ना व ध नि य व सा द म्प व क र मि र्थ प र्थ क र ध र मि र्थी न य धा पि ना म सूरुत म्प वा प्र द्वा वा स प नि य क र्ध न न ना ना व स न स र्ध वा न र
 न य धा पि ना म सूरुत इ धु र्ध ना र्ध र्ध म्प वः सा र्ध डिका र्ध व म ना क नि ना म प रि क र्ध क र्ध चि व र्ध न व द्वा म्प क र्ध व ना र्ध स मा र्ध पि न र्ध ना प नि र्ध र्ध ना र्धी
 म रि र्ध र्ध ना र्ध व दि न य म न सूरुत ना र्ध र्ध म्प ना र्ध वि धा नि म र्ध ना क र्ध म की र्ध ना सि व स र्ध स र्ध ना ति न र्ध ना र्ध न र्ध र्ध र्ध वि धा क र्ध ना न सा ना र्ध वि र्ध म्प न र्ध र्ध
 ए वं सा र्ध र्ध र्ध र्ध ना र्ध र्ध र्ध न म र्ध ना र्ध वि धा ना र्ध स म न्वा र्ध ना र्ध वि धा नि म र्ध न र्ध ना क र्ध ना प सि हि ना र्ध वि धा नि ति । ए वं म्प व सूरुत कि क र्ध पि वा
 धि स र्ध सा सि प्र द्वा र सि द्वा नि न सि न वि न सि कृ द्वा । सि वि र्थ म स्य प्र मा दा र म्प धि म की न स र्ध म मी र सि सा ला र सि ल म न व म सि प्री ति न सि प्र मा य म सि प्र मा स्य नि
 प्रा मा य म सि प्र मा स्य नि वि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा धि म रि सें वा धः न व स र्ध पा न मि ना म ध न व न । न व न वा सो श्र द्वा सा क कि सा न वि स क र स धी र्थी धा प्र हा द सो धि म कि सा ध म यः स र्ध ग सि को न वः सा धी ति मे सा मा य स र्ध सा द स र्ध मः सा न नि कि क ध न ना न र नो म म्प क्क वा
 ए वं वा धि स र्ध र्ध र्ध ना र्ध ना क र्ध म ना र्ध स र्ध ना ति । य व सा द म्प व क र मि र्थ प र्थ क र ध र मि र्थी न य धा पि ना म सूरुत म्प वा प्र द्वा वा स प नि य क र्ध न न ना ना व स न स र्ध वा न र
 इ न स र्ध र्ध म हा र्ध र्ध ना क र्ध ना र्ध पि ही न र्ध ना ति । का प्र नः सूरुत वा धि स र्ध सा न ना व ध नि र्ध सि द ना य र्ध म्प व क र मि र्थ प र्थ क र मि र्थी न य धा पि ना म सूरुत

۱۹۹۷

৩

[illegible][illegible]

पुस्तकं नितानि निविशत। कश्चिद्विस्तृतमस्तौ न पत्रस्य श्रद्धा गच्छति। कश्चित्सूक्तं वा विस्तृतमस्तौ भ्रम्यान्मि न पापं प्रहृष्यात् मिताया माया मया नाया न
 वलियतन विद्वद्वा रवनिना प्रसूतिन सक्तु स्यति न सक्तु समापयक। न कां कतिन विवि किं सति न पन्था मने इव गमहने इ विम्वयेने इ रिन्द निवा पुस्तकाय मिताया दर्शन
 नं प्रवत्तं सक्तु स्यति। न सक्तु समापयक। कतमेन रगवत्ता का न न न पुस्तकाय मिताया दवा मिता रवति। रगवानाह॥ सर्वरूतानि मया सूरुते सक्तु सक्तु न वाधिस
 त्वेन मस्तु सक्तु न पुस्तकाय मिताया दवा मिता रवति। सूरुतिनाह॥ कथमगवत् सर्वरूतानि मया सक्तु नि यववा मिता रवति। रगवानाह॥ आकाशे निमया सूरुते सक्तु
 सा आकाशे प्रवत्तयाः आकाशे मया सूरुते सक्तु सा सर्वरूतानि मया सक्तु नि यववा मिता रवति। मारुतं पुनः सूरुते सर्वरूतानि मया सक्तु सा यववा नो यं यं
 यववा मिता। नक्तु सूरुते इ प्रमया हि सूरुते सर्वरूता अपमाना हि सूरुते सर्वरूता य सूरुते भू प्रमय मय प्रमा नं न न पं न वेद नान संहान संस्कृता न वि हूत न त्रय ॥ १२२ ॥
 फी न हि सप्तमा न धिगमान मानमा र्त्त न मार्ग रू संत हूतं न विहूतं नो सूरुते न विना सो ना सा धान वया न निना क्षन लवनान विरा बना। नापिक न चित्तु न त्रापि
 क कश्चिद्विगतं नापि कश्चिद्विक्तु ॥ नापि कश्चिद्विगतं नापि कश्चिद्विक्तु ॥ नापि कश्चिद्विगतं नापि कश्चिद्विक्तु ॥ नापि कश्चिद्विगतं नापि कश्चिद्विक्तु ॥ नापि कश्चिद्विगतं नापि कश्चिद्विक्तु ॥
 पुमयता। मा चा पुमयता न सा गका के न चिदरि संवाधमा न रू पत न वेद नया न संहूत न सक्तु नै र्व विहूत न नान पान पा। न मितायानि तपान्म नया न त्रापि पातः
 मितायानि विम्य पात मितायानि नया न पात मितायानि पुस्तकाय मितायानि का रितं वाधमा नक्तु सूरुते इ प्रमया हि सूरुते सर्वरूता एवं वेद नै व सूरुते र्व सा ना य व विहूत न म

वं हि सूरुते सर्वरूता। दान पात मिने व हि सूरुते सर्वरूता। प्रालपा न मिने व जाकि पात मिने व विम्य पात मिने व पुस्तकाय मिने ॥ धो नपा न मिने व हि सूरुते सर्वरूता। अ
 थत्कृत्वा को दवा ना मि दुः सार्द्ध का मा वचने देव पुत्रे बुद्ध्यापि सहापनिः साधु रूपा वचने देव पुत्रे यं तत्तु ग का के नाप सं का कउप सं क म्य रूग वक्तु पा दो धि न सा रित व
 य रूग वक्तु कि पुत्र जिना क स एका के त स्तो। एका क स्मि नं यं को दव कु कामा वचने देव पुत्रे। साधु बुद्ध्यापि सहापनि रूपा वचने देव पुत्रे। सार्द्ध रूग वक्तु मं
 द वा वत् ॥ गमि नां रूग वत् पुस्तकाय मिता ॥ इदं रूग वत् पुस्तकाय मिता इ न व वा रूग वत् पुस्तकाय मिता ॥ उदम पथ व स पथ न स थ ग न सार्द्ध कः स मय
 वृद्ध स्यात् रूग वत् स मय कं वा धि म हि सूरुते मा त्र स्य वा धि म (धु) निष र्त्तु स्यात् सा त्र क ग या चि रू म व न ध म्मि द न नया। एव म्म क रूग वत् क रू वा ना मि दुः का मा वचना
 य द व पृं वृद्धा तं सूरु सहापनि रूपा वचने देव पुत्रा नाम कु य के म्मा ॥ एव म्म तत्तु द व पृं वृद्धा एव म्म तत्तु गमि नां वत् यं देव पुत्राः पुस्तकाय मिता। इ न व ग। हि मं द व पृ
 याः पुस्तकाय मिता। इ न व वा धि मं द व पृयाः पुस्तकाय मिता ॥ उदम पथ व स पथ न स थ ग न सार्द्ध कः स मय कं वृद्ध स्यात् रूग वत् स मय कं वा धि म हि सूरुते मा त्र स्य वा
 वा धि म (धु) निष र्त्तु स्यात् सा त्र क ग या चि रू म व न ध म्मि द न नया गमि ना वना य मया ध म्मि हि सूरुते ॥ मय न कश्चिदरि स म्मि सूरुते। न व चिदरि स म्मि सूरुते
 ॥ उदमं संध म्मि स्य ग म्मि तना। आकाशे गति न त्रा गमि ना यं ध म्मि आत्म गमि न त गमि ना यं ध म्मिः सर्व ध म्मि ग म त न मया गमि ना यं ध म्मि मया हि वृद्ध ॥ एव म्म
 के प्र को दवा ना मि दुः कामा वचना कामा वचना देव पुत्राः बुद्ध्या व सहापनि रूपा वचने देव पुत्रा रूग वक्तु मं द वा वत् ॥ का थ र्थ रूग वत् रूतं सूरुत सर्व रूता का धि पुत्र

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

1192. 1192.

[illegible]

二

अनृचिराशिका मणिः अनृचिरप्रतिकामणिः स्मृतिमानवगिकामणिः स्मृतिमानवप्रतिकामणिः सवासीमानध्ववसुनिनास्यरवधिमः कामधु कामादि
 क्रोत्ररिपायावापनिवित्मेहन कामान्दप्रितुं के सुउ उक्तमरुव कामान्दप्रितुं के ॥ नय धपिनामसुहन चीनका का नमधगः प्रषयाहवा कृत्वं कृत्वं उक्तमरुव
 तं कर्मात्मनमंरुवातं कर्मा कृत्वा नरुव लूनामहमिनः प्रैरका का नाका का रविष्मिथ वंसु अविष्म माहानमाह नरुवमवसुहन अविनिवर्तुनिमावाधिसत्तामहासत्ता अगम
 नमध्ववमका या नान्वका सा सप्रितुं के नतांसा नरथिका उवाग अरवाग का उव कामान्दप्रितुं के नरथिका उवचरुवनि धियुपसा नरुपः पचरिः कामगु लो सु ३ ग
 नमध्व वणकः ॥ नममविममनजिविका कल्पयनि धर्म लेवजिविका कल्पयनि ना धर्मः अपि मरनमपग कृति न लेवपनषामपमर्दनं कृत्वा नरुव सहा सु धाहि
 ने सत्प्रपेमाहापरुषः प्रषयवने प्रषसाहने प्रषरिः प्रषयाहने प्रषसाहने प्रषपुष्टवे प्रषधुये प्रषपथे प्रषपुष्टुलिके प्रषाङ्ग नये प्रषनाजे प्रष
 यमिहि प्रषरुवमसा नधिहि सर्वसत्ता पनमसुखनिमा जमिनवा ॥ उवहिसुहन अगम नमध्ववसुनि वाधिसत्तामहासत्ताः यधपिनामपुष्टुपात्रमिव लाध्वप्राप्त ताद शितपि
 सुहन का का ने नरिनिजे नरिनिमिहे समवागता वाधिसत्तामहासत्ता अविनिवर्तुनीया अरु नायासम्य कंवा धर्म नमिनवा ॥ पून नपनं सुत नरुविति वरुतिममस्यवाधि
 सत्तस्यमहासत्तस्य वज्रयाने र्महायज्ञानिरा नवज्ञा रवनि सधर्षा रवनि अनतिकुमलायश्च रवनि समनृषीर्वा अमनृषीर्वा इना सदः सर्वसत्ता नां सनिकिफचि को रवनि नवि
 क रजिमाहवनि पत्रिपुष्टुडियश्च रवनि नापत्रिपुष्टुडियश्च रवनि प्रषयवने डिय समवागताश्च रवनि नासत्प्रपः सजानिमानि मि भाम्यसी कन लमिना मनुजापाः

[illegible]

卷之九

[illegible]

॥ प्रश्न ॥ श्री भो रगवानाह ॥ गत्किम्प न्यमसू न न वमया सर्वधर्माः ॥ न्यायं स्यात्पातनाः सत्यं न्याह ॥ न्यायं वरगव सर्वधर्मः ॥ अथ गते नाद्यानाः रगवानाह ॥ यतस्तु न न्यायं अक्रमात्
पिने ॥ याच न्य नाजप्रमिय नापिमा ॥ बस्मार्ह हि सुत न न पां धर्माः ॥ मथ ना वि धाया ना क न त म्या नाप ल त्त न ॥ अरि ला पा न व म स त्त न न थ ग न ना र्वा नाः ॥ अरि ला पि न् अ प्र म
मि नि क अ स र्वा य मि नि वा अ क्र म मि नि वा ॥ न्य मि नि वा अ वि मि रु मि नि वा अ प्र ति हि त मि नि वा अ न रि स स्का त मि नि वा अ न् न्या द वृ मि नि वा अ न नि नि क वा अ रा व र्ध नि वा वि
ना गा वृ मि नि वा नि ना ध वृ मि नि वा नि न र्वा न मि नि वा द न ना रि नि र्वा न नि र्ध न ॥ उ स स र ॥ न न थ ग व ना र्हा वा स म्य क्त्वं द न र्वा नाः ॥ स र ति ना ह ॥ अ न् न्या य म् ग व न्या व दि यं न थ ग न ना
र्हा वा स म्य क्त्वं द न् सर्व ध र्मा ॥ न् न् ध र्मा ना द धि ना थ ॥ सा च सर्व ध र्मा ॥ न् ध र्मा ना अ न रि ना प्या ग थ ह र ग व र्ग व ना र्वा पि न स्या र्थ मा ना ना मि ॥ न थ सर्व ध र्मा अ पि र ग व न् न रि ला
पाः र ग वा ना ह ॥ उ व मि न स र ॥ उ व मि न स र्ब ध र्मा अ पि स त्त न् अ न रि ला प्या स क स्या र्हा र्थ म् स त्त न् सर्व ध र्मा ॥ न् न् न ना न स्या क्त्वा ॥ अ रि ला पि तु ॥ स र ति ना ह ॥ कि म्प न र्ग व न् न
रि ना प्या र्थ म् द धि र्वा इ मि प त्रि हा नि र्वा वि द्य न ॥ र ग व ना ह ॥ ना हि दं स र त्त न् स र ति ना ह ॥ स च र्ग व न् न रि ला प्या र्थ म् ना व दि र्वा प त्रि हा नि र्वा न पा न मि ना या अ पि न द धि र्वा प त्रि
हा नि हा र वि ष्य र व न् ना ल पा न मि ना या अ पि ना नि वा न मि ना या अ पि वि र्वा पा न मि ना या अ पि ध म् न पा न मि ना या अ पि पु र्वा पा न मि ना या अ पि न द धि र्वा प त्रि हा नि र्वा वि षा ति ॥ स च र्ग
ग व ना सां ष र्हा पा न मि ना नां वा र्द दि र्वा प त्रि हा निः क थ म् ग व न् न वि र्वा मा ना नां ष र्हा पा न मि ना नां व ल न वा धि स स्वी म हा स स्वी र्वा न् न स म्य क्त्वा धि स रि स वृ द्धा ना क थं वा
न र्वा ना स म्य क्त्वा धि स रि स वृ द्धा ना क थं वा ॥ न र्वा ना स म्य क्त्वा धि स रि स वृ द्धा ना क थं वा ॥ न र्वा ना स म्य क्त्वा धि स रि स वृ द्धा ना क थं वा ॥ न र्वा ना स म्य क्त्वा धि स रि स वृ द्धा ना क थं वा ॥

॥ १३८

[illegible]

॥ १५० ॥

[illegible]

१५२

[illegible]

॥ यस्तु ॥

उक्त्यापानादका समुद्रां संगं कृत्वा दिति संजातमनु सं पृथिव्यां प्र ति स्थापय नरग वा वता अलिप्तममरग व कम तद वा वता कारगव केतुः कः पुस्तमः स्मिन्
स्योपद्रुक् न भयं नाहउ कत्र ख ल्य म क भगना अहं क सम्य कं वृद्धाः स्मिन् प्रादुर्भूति उवम के रग वा नाय क मान न्द म न द वा चत् ॥ ७७ ॥ मान न्द ग क द वा र
नी अ नाग न ध नि सुवर्ह पृष्ठा नाम न भग न र विष्णु र हं सम्य कं वृद्धा विष्ठा व न न स म्य वः स ग ना लोक विद दूत नः पृथ्वी द म्मा सा त्र थिः सा स्ता दे वा ना के म नृ ष्या भ ध
वृद्धा र ग वा ना लोक उ त्पत्त्य न ना न का य म क र्थ अ न रू गो स म्य कं का धि म हि स क्ता स्य ता म य मान न्द ग क द वा र गि नी मी रा व वि व र्ण य प्र ष ता वे द नि स ल व न श्या
अ शा स्य न भग न स्व वृद्ध क उ र वि त र्ण लोक ध ना वृ प पत्त्य न ना न प प वा स नि कौ त्प स्य न भग न स्या र्हतः सम्य कं वृद्ध स्या कि क वृ ष च र्थ के त्रि ष्य ति न न
ना स ति वृ द्ध ज्ञा वृ द्ध ज्ञे स कु मि ष्य ति अ वि न हि ना न भग न द र्श न न त न पि वृ द्ध क ज्ञा नि स कु मि ष्य ति मा न्य वि प्र हि ना नि र वि ष्य ति वृ द्ध र ग व हि स न उ स कु मि ष्य
ति न य भ्या वि ना मान न्द ना गा व क र्हि प्रा सा द्वा सा द स कु मे म्मा व र्णी व म्मा प न ग र्ध न ति न स वा कु म स या व न न भव स्या या र मि त लं प ह्य मे ना कु म्मा का लं क
र्या द व म ना न न्द मं ग क द वा र गि नी वृ द्ध ज्ञा वृ द्ध ज्ञे स कु मि ष्य ति न उ चा र त र हि ना र वि ष्य ति वृ द्ध र ग व हि र्या व द्वा न रू ना स म्य कं वा धि म हि स र्ध ना न थ र व
मृ ष्य क शो न न्द स्ये ग द र्श ना घ न ग्रा शा स्य न भग न स्या र्हतः सम्य कं वृद्ध स्या कि क वा धि स र्ध म त स र्थ र वि ष्य ति न भग न सु त्रि ष्ठा न उ व स र दि त यः अ थ र वः
नृ र ग वा ना य ष्य न न्द मं ग क द वा र गि नी वृ द्ध ज्ञा वृ द्ध ज्ञे स कु मि ष्य ति न उ चा र त र हि ना र वि ष्य ति वृ द्ध र ग व हि र्या व द्वा न रू ना स म्य कं वा धि म हि स र्ध ना न थ र व

॥ ७७ ॥

॥ यस्तु ॥

महासत्त्वाः यश्चाप्यस्य न भग न स्या र्हतः सम्य कं वृद्ध स्या कि क वृ द्ध ज्ञे उ व च र्थ च न कि क धि प त्रि त्रि ष्य र प ग ना क शो न द वा धि स र्ध म त स र्वा धि न द्याः त स्य र व
पू न ना न्द सु व र्ण पृ ष्य स्य न भग न स्या र्हतः सम्य कं वृद्ध स्य न पु मा न व दः अ व क सं धा र वि ष्य ति न क स र्हा क्ता व क्ता हि अ न न्द न उ प्र व क र वि ष्य ति य पा श मि
उ मा न प पि त्पु म या स र्वा या अ र्ध वा स र्वा ग मि ष्य ति न न र व लू न ना न द का र न न स म य न न मि न्द क उ न वा उ का ना नि र वि ष्य ति न वा न का ना ना नि न
पा ति य का ना ना नि न वा धि का ना ना नि न इ कि क का ना नि र वि ष्य का ना नि न ना ना नि न ना न्द स्य न का ना ना नि न मि न्द क उ न स र्ध स र्ध स र्ध स र्ध स र्ध वि ष्य ति न पु
स्य क स र्वा र्ध पृ ष्य स्य न लू न ना न न्द न भग न स्या र्हतः सम्य कं वृद्ध स्या न रू ना स म्य कं वा धि म हि स र्ध म्मा न्द र पा ति र म र्धे न व का ना ना नि स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा
क दानि ती न र वि ष्य ति न पु लू स्य क उ व म्मा नान्द र ग व क म न द वा चत् ॥ ७८ ॥ न मा र ग वं ग क द वा र गि ना क न म स्य न भग न स्या कि क उ थ म चि र्वा स्या द क
ग ल म्म ल म व ल पि न म व रू ना यो स म्य कं वा धि म हि स र्ध म्मा न्द र पा ति र म र्धे न व का ना ना नि स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा
वृ द्ध स्या कि क पु थ चि र्वा स्या द क ग ल म्म ल म व ल पि न म व रू ना यो स म्य कं वा धि म हि स र्ध म्मा न्द र पा ति र म र्धे न व का ना ना नि स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा स र्वा
ना स म्य कं वा धि प र्थ य मा न द्या य ग म्मा पं व र्ण क र्धे पं क न स भग न र्हतः सम्य कं वृद्धा वि ष्य नृ त्य र्क ष व म्मा ध र्म ष्ठा कि पु ति ल्प्रा ता हं दि क प क न न
न भग न र्हतः सम्य कं वृद्धि न द्या क ना र न रू ना यो स म्य कं वा धि र वि ष्य सि र्वा न द्या ना ग न धा नि सा क म्म नि नी म न भग न र्हतः सम्य कं वृद्ध वि ष्या व न न स प त्र स ग न

[illegible]

पहलसु न्मातपिण्डपूजयनमात्मानं कृतनामहारमतेन वादवीका का नासक। नमनस्वस्ति नानीधुमपकामयिठुयावगुमम्या नगनम्यानिगम्या ननुपाफः स्या
त॥ उवमृक रग वा नायुष्मन्सुदतिमनदवावत॥ उवमवसु रग वाधिसत्वा महासत्त्वः सर्वसहितानुकम्पी भैत्रि विहारी कर्त्तृ विहारीः मुदिता विहारीः उप
जाविहारीः उपाय कोण लीन प्रह्ला पात्र मिताया वपनिगृहितः कुशलमूलानि सम्यक् बुद्धा नृहाननयापनि तन्मय किं पि न यता माति मरु मय निहित के स
माधिविभाक्त सुखाय वनत्रनि नत्वेव रूत काटि सा ज्ञात्कृतानि यद्वन भवक र मोवा पुलक बुद्ध र मोवा गत्क सहता सु धा हि न् स्ववत्वरुमाः दृढ न मा शु पानि
ग्राहका यद्वन प्रह्ला पात्र मिता उपाय कोण लीन के न नास्यापनि लकाः सर्वसत्त्वा स्तेनेपुति व स स्वस्ति नाके मे ध नृह तासम्य के वाधिमहि संवाधिमहि संवाध
मृ॥ मस्मि समम्य सूरत वाधिसत्वा महासत्त्वः सर्वसत्त्वा नाम निक मे गु चिह्न मानव ता क ना स न म्वा नी क र्त्तृ नाम न मया मे स्थापनि व धा नि न्द्र ग क न वाधिसत्वा
महासत्त्वः कुशलपद म्मात्र पद ज्योति कुम्य भवक र मिधे पुलक रूत मिधे ल क बुद्ध र मिधे नि कुम्य सत गु स मा धाव व नि द्द त॥ नृपा फ शु स स रूत न्द्रा शु
रुमयत्र म पात्र मिता यो शु न ना म्मा प नी जयं क ना नि॥ मस्मि समम्य सूरत वाधिसत्त्व महासत्त्वः न ना स मा धि वि भा क्त मत्वन विहय त्ग क न वाधिसत्वा महासत्त्वानव
दा नि मा नि मि रू त समाधि ना विह न विन चान ना डि मि रूः समाधिः सा ज्ञात्कृ ता र व नि न म्वा पि ना म स रू त प नी ण कु नि ना क ण न नी ज व न ति॥ न च रू मोप क तिः
न च क थि नि शु य नि सु र्प ति क र्त्तृ का ण स व न त्रि न्द्र विह न ति॥ न च न गु पि नि णि न न पु नि शि न्तः उवमवसु रग वाधिसत्वा महासत्त्वः न ना विहान न च विह न

卷之六

[illegible]

945

[illegible]

[illegible][illegible]

॥ पु. ॥ तस्याप्यविवेकः उवंसंकेतगवानामप्यनसूयकमिदमविवेकः सचत्सुहृन्वाधिसत्त्वं महासत्त्वं विविकारवतिः अभवकपुष्टिसंयुक्तं मर्मनसिकानेर्विविकारव
ति। पुष्टिकरूपपुष्टिसंयुक्तैः मर्मनसिकानेन वंसंवाधिसत्त्वामहासत्त्वं विविकारवति। अमाकपिबिहन्नुह्यपानमितापायकाण्यसर्वसत्त्वमेतीमहाक
रुह्यविहात्रिहन्नेदनेन विहानेन विहानेन विविकारः उवंसंविहानेति। अयं स्वल्पपुनःसूयकसमयाधिसत्त्वमहासत्त्वस्य अभवकपुष्टिकरूपपुष्टिसंयुक्तम
सिकानविवेकाः नृणांः अत्र न विविकतावेहिनः स्याधिसत्त्वामहासत्त्वं नातिन्यवान्यमिनामपि विविकारविहानेति। सर्ववाधिसत्त्वामहासत्त्वं न भवन्नयस्य
विहानस्य सान्नादिषु पाकस्य नाम स्य न विहानेन विहानेति विविकारवाधिसत्त्वामहासत्त्वं विहानेन संपुनःसूयकमानः पापिष्यविवेकमप्यदत्तं। अ
भवनपस्यागिनेहास्यभनपाकस्य नाम सन विहानाः न न विविकेन अभवकपुष्टिकरूपपुष्टिसंयुक्तैर्मर्मनसिकानेः सकीर्णं उवंसंयुह्यपानमितापायम
रिष्यमानानसर्वहृह्यनपत्रिपुनयति। उवंसंकोक्तं विहानेन विहानेन वस्याः पत्रिण्डकनमनसिकानेन विहानेन पत्रिण्डकायवाधनस्कर्म्यं कनवंतविषु
किहूरपत्रिण्डकायवाधनस्कर्म्यं कनवंसंस्फाड्यानपि वाधिसत्त्वामहासत्त्वं अमाकविहात्रिहानसकीर्णमादकपुष्टिकरूपपुष्टिसंयुक्तं मर्मनसिकाने
पुण्यममहाकरुह्यविहात्रिहानेन स्य न। अत्र न विहानेनः स्याः पत्रिण्डकायवाधनस्कर्म्यं कः यस्य किर्णं विहायवहवति। न विविकविहानेन सपुह्यपायम
हाकरुह्यविहानेन विहात्रिहानेन अमाकविहानेनः पत्रिण्डकायवाधनस्कर्म्यं समाचानां। अभवकपुष्टिकरूपपुष्टिसंयुक्तमनसिकानविविकानसकीर्णं।

अत्र के वैपुल्ये क वृद्धपुत्रि संयुक्ते मीनसि कात्रेः स सावसा इव मनमाना न धनममा धिसमापह विमोहा हि ह नो ला ली ह विपनि । न चास्य न पतिपुत्रि
 अमिष्यति । तस्मिन् हतास्तु अहि सा इव पि यदु न शरवति । किंचापि हस्तने वाधिसत्ता महासत्ता अजाननिक कृत्तविका कात्रे विहज दयाग नवा दु मगप
 किं संधयपगन कृत्तमग वा उय कना कसा इव विचित्रि न खपगन वा न का का न रय रे न वा पड वषु सत्रि कता वर्ष म्मा वर्ष न वा वर्ष सहस्रं वा वर्ष सत सहस्रम्या
 वर्ष काटि म्मा वर्ष काटी गत म्मा वर्ष काटि सहस्रं वा वर्ष काटि सत म्मा वर्ष काटि सहस्रम्या वर्ष काटि निष्क सत म्मा वर्ष काटि सहस्रम्या वर्ष काटि निष्क सत म्मा वर्ष काटि
 न जानिया अत्र विवे के न वाधिसत्ता इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का
 वविव के नि सत शालीना इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का इध्वा गय संपत्ती का
 सत्ता ना म्मा अख्यातः तेन विवे केन विहज कस्मिन् विवे केन मरु द्यत । तस्मिन् मानः पापीया नृपस कुम्पापय्य क नी के विहाय सि स्ती ल्ये वं वं धति । साधु साधु क न
 एत उष वाधिसत्ता ना महासत्ता वा कथा गत न विवे क अख्यातः ॥ अत्र नेव से क स एत विवे के न विहज नः एव त्वं किं प्र म नृ नो सम्य के वाधि महि स क्त्वा न्यस्य
 म न ता विवे का एत नेवान्धा क्त्वा पाक म वति र्य न द न्या न्धाधिसत्ता महासत्ता न्य ग ता किं नृ स वृक्ष चित्रि नः व स्या त धर्मः असं की र्त्त अव क पु ल क वृद्धपुत्रि
 संयुक्ते मीनसि कात्रेः पतिपुत्रि का म वा अ नस्कर्म का जी वान व म म्मा ॥ स एव म्मा ॥ स की र्त्त विहा न स व न म्मा अय य का विहज कि । न वि वि क विहा न

[illegible]

॥१५॥

[illegible]

॥

[illegible]

॥१३१॥

[illegible]

॥ पुस्तक ॥ महाभारतमात्रं ॥ अथ शृणु नृपति पुरुषोत्तम कथं ह्युपायमिहावधीमनवीर्यस्य पापानन्दवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य मानः पापिमानपसकामिनिविह ॥ नामोपायो अथानवस्य सत्त्वं ॥
पुनरपनमानदमावाधिसत्त्वो महासत्त्वोऽस्य मीपति ग्रह कर्मातिनारवकिानवममसहायकः सर्वाधिपुमानन्दमनजमनावाधिसत्त्वमहासत्त्वामानिषिमहायकाः सः
किानवपुनस्मिमाहिप्रायपतिपुनमस्य मनुमयाप्रदिकुसहायालपु अममाहिप्रायपतिपुनमिष्यस्य स्याप्यानदवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य मानः पापिमानपसकामि
मिनिविह ॥ नाहिप्रायावतात्रेक्षस्य सत्त्वं पुनरपनमानदमावाधिसत्त्वो महासत्त्वोऽस्या कर्मापापमिमावाधिसत्त्वमवदकमीनावतयं प्रह्ला
पातमिताकिनवेनमाश्रनमानकवमपुत्रमानमन इत्युक्तेष्वध्यागतेनराधितपरमप्यस्यागधमायादचनसत्त्विकवेनमाश्रनमालिखितमाचकिानुवमायापनीवा
सत्त्वाभ्रसत्त्वाविवयमर्षना अस्यापानदवाधिसत्त्वमहासत्त्वस्य मानः पापिमानपसकामिनिविह ॥ नाहिप्रायावतात्रेक्षस्य सत्त्वं पुनरपनमानदयस्मिन्समयवाधिसत्त्वा
महासत्त्वानवममना अहदिवकविहाननविहनामिना नयविवकविहाननविहनामिना नयविवकविहाननविहनामिना नयविवकविहाननविहनामिना नयविवकविहाननविहनामिना
मनाः पुम्दिनप्रीतिमो मनस्यगतारवकि संसृष्टिचिह्नपिप्राभादिका नारवकि ॥ तत्कस्य तादनीकत्रिषत्येव इन्द्रोऽस्य सत्त्वोपाधिमिति पुनरपनमानदयस्मिन्समयवा
धिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य नामग्रहनेवायमवग्रहशब्दापुनरुत्तपति कीर्तनमार्तवकिानुवसतावत्मावकेनतताइत्यावाधिसत्त्वो महासत्त्वोऽन्यथा नान्कस्याधर्मस्य इवमन
कानवचनस्य गतमेविद्यकाय रविनिवरुणीमानावाधिसत्त्वानामहासत्त्वानां प्रह्लापातमितायाचनतात्त्विकश्रका नाकानिनिज्ञानिनानिनिमिवातिनस्य नमस्मिधक

॥ १६ ॥

[illegible]

१३२॥

57

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

१११॥

॥ श्रद्धां वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ त्वत्वाय मानुष

त्रिष्टुभ्रायुष्मकं सूरुतिमन्दवाचक। सा नवनाममायुष्मसूरुतिवाधिसलोमहासत्त्वचरतिप्रः पुष्पात्रमितामो चरितात्रुवमूकं आयुष्मासूरुतिनायुष्मक
सात्रिष्टुभ्रमन्दवाचक। अस्मानवनाममायुष्मसूरुतिवाधिसलोमहासत्त्वचरतिप्रः पुष्पात्रमितामो चरितात्रुवमूकं आयुष्मासूरुतिनायुष्मक

[illegible][illegible]

九月廿

[illegible]

॥ ४॥ यमान नृपा धर्म्य दस्यमो नृप नक्षत्रानमन्ति। तेषां विनिवर्तनियतायां स्यात्स्यकि। पुनरपने सूरतयवापि सत्तामहासत्ता धर्मा उरुपा नमिना सधर्मा
 अथ त्वाविमानिके। तथ वापिष्यकि। तकाविष्यकि न विव किस्मिप्यकि। नवमनय अग न नाह नसम्य कं वधेन रापि नमि सधिस्य विरुत त (अप्यकि) पु
 वधेचिर सत्ता दमिष्यकि वधमावयपुस्तानमिनामाजी लस्य तथ ग नमार्ह नः। सम्य कं वधस्याकि का विरुत न गच्छेत्। यामेति॥ नवा वापि सत्तामिना का ना
 पुस्तानां यचा सत्ता कुरु मेव चर्या अत्रकि। कक्षाधिकादिमाभिवरुता पात्रमिना गच्छेत्। तथ नक्षत्रा पात्रमिना मे पिस्यमा नायथा नथ ग नत रापि न
 तथ वापिष्यकि। तथ पिस्यमा ना न विनिवर्तनिय तायां स्यात्स्यकि। एवं सूरतवरुतं पुस्तानमिनाया अवनमिषवता मि। कः पुनर्वा पाय उन्नाम धिमाधकि र
 धिमा च न थ त्वा मस्य स्याकि न थ त्वा मसति पस्यकि। तथ त्वा मसि त्वा तथा। त्वा मा। पुनिपधतिष्यकि तथ त्वा माकि कः सर्वतया धर्मा दग धिमा के॥ सूरतिनात् ॥ ५ ॥
 यदा हावव कथना विनिर्मका। नयः कश्चिदुर्म उपनयने। यदा कायं रगवधर्मः स्यात्स्यकि तथ त्वा माका। वायमवत नो सम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता का वायमिमधर्म
 कथमिष्यकि॥ उवम के रग वा नायमक सूरतिमनद वा चत॥ य सूरतं एवं वदमि यदा तथ ना विनिर्मका। नायः कथी धर्म उपनयने। तदा कायमधर्म सत्ता मायाः
 स्यात्स्यकि का वायम नृह नासम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता का वायमिमधर्म कथमिष्यगीति॥ तसै सूरतं तथ ना विनिर्मका। नयः कश्चिदुर्म उपनयने। यदा कायमधर्म सत्ता मायाः
 स्यात्स्यकि। तथ त्वा मावतावसूरत नोपनयने॥ कः पुनर्वा पायं तथ त्वा मा स्यात्स्यकि। नसूरतं तथ त्वा नृह नासम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता। सापि सूरत धर्मा न कश्चिदुपनयने।

॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ यदा नृह नासम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता वा अरिसम्य कं वा अरिसम्य कं वा न सूरतं तथ त्वा धर्म कथयति। सापि सूरतं नापलस्यता। य धर्मा दग धिमा के॥ सूरतिनात्
 आ रगवव के म नद वा चत॥ गमिना रगवत पुस्तानमिना इ क न का रव ना धिस त्तामहा सत्ता म नृह नासम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता का मास क सूरत न च नासम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता
 किंकि। नापि कश्चिदुर्म उपनयने। यदा कायं रगवधर्मः स्यात्स्यकि तथ त्वा माका। वायमवत नो सम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता का वायमिमधर्म
 कथमिष्यकि॥ उवम के रग वा नायमक सूरतिमनद वा चत॥ य सूरतं एवं वदमि यदा तथ ना विनिर्मका। नायः कथी धर्म उपनयने। तदा कायमधर्म सत्ता मायाः
 स्यात्स्यकि का वायम नृह नासम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता का वायमिमधर्म कथमिष्यगीति॥ तसै सूरतं तथ ना विनिर्मका। नयः कश्चिदुर्म उपनयने। यदा कायमधर्म सत्ता मायाः
 स्यात्स्यकि। तथ त्वा मावतावसूरत नोपनयने॥ कः पुनर्वा पायं तथ त्वा मा स्यात्स्यकि। नसूरतं तथ त्वा नृह नासम्य कं वापिमहि सत्ता स्यता। सापि सूरत धर्मा न कश्चिदुपनयने।

॥ प्रस्ताव ॥

[illegible]

११८

[illegible]

॥ बुद्धिः ॥

22

[illegible][illegible]

१८६॥

[illegible]

जो कंठ मी श्री धर्म धर्म ग न वा धि स त्व म हा स त्व स क र्द कामः सा ह म सा स त्व व स काम क न र ह । न यो न द ह द हा व न ह म स स प ॥ १ ॥ मा ह म स त्व व स पा पि का म क न र
 र ह न न वि कि य म हा पा त मि ना योः य जो क यो मा यो ध र्मा न न वा धि स त्व म हा स त्व स क र्द यो मि नि । अ थ ख ल स मा न व कः स प पु त्र दि न वी धि स त्व म हा स त्व म न द वा च
 न । न म म क र पृ ष पृ ष त क र म पि नु त्व रू प नः पि नु म य ह म य व स क र म पृ ष म ह द य न क लो हा रि न ना सि म क र मा च न प स सि त्व क य नः न थ ख ल स प पु त्र पी न
 न स्या वा धि स त्व म हा स त्व म न द ह न । सा ल भ य म म स र म । प त्रि ति ष न के स मा न न यो न पु ह पा न मि ना ड पा य को ग ल र ह ध र्मा ध र्म य म यो य म न व कः का पि को ल यो
 रु द न सा र धि न स वा सि स क र मा यो नि । सा ह क वि कः क ल य वि कः पु म दि न वि कः स मा न व क म न द वा च न । ना स्या मि मा न व क य न य न व क न न व नो स रा वा द थः म न म
 न द वा च न । कि क र पृ ष स पं द स्या मि स न म न द वा च न । ये ह मा न व क प त्रि स क र हि नि । अ थ ख ल स प पु त्र दि न वा धि स त्व म हा स त्व सि क र म मु ग ह । सा द कि न वा र
 म यो सो हि त नि भ व य नि म । द कि न नो र वि धा नि मी म य क र मा न र म ह नु क य म म प स को य नि म । न थ ख ल य न नो क षि पा त्री क ड प त्रि का पा सा द न न ग वा क
 न । सो अ नो त स पा पृ त्र दि न वा धि स त्व म हा स त्व म यो र म यो र धि न दि मी से क लो म र सि नु क य म न म प स को क क स्या न न द ह न । कि न व त्व यं क र पृ ष नो स न कि द सि
 को न नो का न य नि । य न ह म न क र पृ ष म प स को य प त्रि स क य न थ ख ल स प पु त्र दि न का य न स प पु त्र दि न वा धि स त्व म हा स त्व स नो प स को का ड प स क मा स प पु त्र दि
 न वा धि स त्व म हा स त्व म न द वा च न कि ख ल स क र पृ ष न व र पा मा म न । का न ना का न य सि । कि म्वा न न र धि न न क त्रि षा सि त्व म सि म क र मा यो न प पु त्र दि न न
 अ स्या नि क मा न क स्या नि क र वि कि य पृ ह पा त मि ना यो र मि धा म्या यो ध र्मा न न वा धि स त्व म हा स त्व स क र्द नि यो मि । अ थ ख ल स प पु त्र दि न वा धि स त्व म हा स त्व स प पु त्र दि न
 म हा स त्व म न द वा च न । का पृ ष क र पृ ष नो नो न न नि यो स्या नि । न न वि स्या वा य न मा म नो ह द य के र धि न थ सि म क र मा न थ वि कि य न क र पृ ष स क र्द कामः ॥ १ ॥

॥ १०५ ॥

काम न द वा च न ॥ स प त्रि क र पृ षा ॥ स्या क स्य स पा त मि ना म पा य को ग ल यो प द स्या नि । न न व य नि नि स्या म ह । न न व य नि न य मा नः स र्व स त्वा ना स्या नि न न ॥ १ ॥ वि धा मा ध
 र नो स म्म कं वा धि म रि स र थ स र्व र्थ क म पु नि न स्या म ह । द्वा ति स च्चे म हा पृ ष ल उ न न न नि यो न नो न नि । वा म पु र व न न क र सि । न थ म हा म यो क र म हा प
 म च म हा म दि ना व म हा प को ध र च ता नि वे म न य नि पु नि न स्या म ह । व न म थ य नि स म्मि दः पु नि न स्या म ह । अ क ष ड ग ष ड नि का व ध र्मा म्पु नि न स्या म ह । प थ र हि न्ना अ चि त्वा
 थ नि न वि षु डि वी स डि म चि त्वा कृ प वि षु डि न य च न थ ग न व न नि पु नि न स्या म ह । अ न र न व क र न म रि से र स्या म ह । अ न र न ध र्मा न त्व व पु नि न स्या म ह । य न स र्व
 स त्वा नो स मि य ल ग क नि षा म थ नि । अ थ ख ल स प पु त्र दि न का स प पु त्र दि न वा धि स त्व म हा स त्व म न द वा च न । अ थ यो क र पृ षा व द द ना पु त्री न वा मि त्व यो ध र्मा य त्रि कि र्द
 नो उ के क स्या पि ना व क र पृ ष व र प स ध र्मा म्पु थ य ग म न दि वा र को प मा न पि क स्या ना स रा वा प त्रि स क यो र व म्पु थ य व व र ना म थ य क स थ द ना पु नि ना म्पु मि त्व यो ध र्मा
 प त्रि को र्द ना । य थ म मा य न न व के क म के च अ पि नु त्व र पः क र पृ ष य न य न व र्थ व क र क य द म्या मि । स र्व र्थ वा म नि वा म का म्वा न न म्वा वे र्थ य म्पु स सा न ग ल म्वा लो हि ना
 के म्वा म्पु नि क म्वा ध प म्वा ग न वा मा स म्वा वि ल प न म्वा च र्वा वी व न म्वा व म्पु म्वा क र म्वा थ र म्वा य नो का म्वा दी प म्वा न न त्व न थ र्मा न न वा धि स त्व म हा स त्व स क र्द नि यो मि । मा वा स न
 क र मा म व न पा का न थ का र्थि व य म पि त्व य व स र्द ग मि षा मा य ना र्थ ध र्मा न न वा धि स त्व म हा स त्व व य म पि त्व य व स र्द क र म्पु स ना न व नो प पि षा मा । य इ न थ म वे व नू पा ना
 स र्मा म्पु नि म्पु नि । अ थ ख ल स को षो वा ना मि का मा न व क र्थ म क थ र प पि त्व स क र म्पु स ना न व नो प पि षा मा । य इ न थ म वे व नू पा ना
 थ न पृ ष म्पु न क र्थ म व नू पा र स मा द न ना । अ व नू प मा व ध र्मा र्थि क र मा प र्व के र पि न थ ग न र हि नि । स म्म क र्द व र्थ व र्थ वा धि स त्व म हा स त्व व र्थ म्पु थ य न मि ना को ग ल य व य नि य के
 अ न र नो त स मा कं वा धि न रि स क र्द न रि स र्वा ध र्मा न न व पु नि स र्थ स योः न न म म क र पृ ष हि द यो स का र्थ न र धि न न ना सि स ज्ञा नि स्या म पि उ ष र प न न हं लो म व मि मा मि उ का म

॥ ५॥

[illegible][illegible]

॥१८५॥

[illegible]



DH-408